Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 271 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, बुधवार 24 अप्रैल 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

तप के माध्यम से मान-प्रतिष्ठा की अभिलाषा नहीं रखना चाहिए।

One should not desire fame-respect from austerity.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

एक सांसद ही नहीं चुनना है, देश का उज्ज्वल भविष्य चुनना है : नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री ने ग्राम श्यामतराई में विजय संकल्प शंखनाद महारैली को किया संबोधित ● महासमुंद, कांकेर और रायपुर लोकसभा की जनता से विकसित भारत के लिए वोट करने अपील की

तीसरी बार सरकार बनने पर छत्तीसगढ़ में रोड़, रेल, सिंचाई और इंटरनेट कनेक्टिविटी का तेजी से विकास किया जायेगा

धमतरी (आरएनएस)। आज मंगलवार को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी धमतरी जिले के ग्राम श्यामतराई में विजय संकल्प शंखनाद महारैली कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ मंच पर उप मुख्यमंत्री अरूण साव,भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, सांसद मोहन मंडावी, कैबिनेट मंत्री एवं रायपुर लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल,पूर्व मंत्री एवं कुरूद विधायक अजय चन्द्राकर, महासमुंद लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी रूपकुमारी चौधरी, कांकेर लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी भोजराज नाग,पूर्व मंत्री द्वय चन्द्रशेखर साहू, प्रेमप्रकाश पांडेय, पूर्व विधायक शिवरतन शर्मा,पूर्व विधायक गण रंजना साहू, पिंकी शाह, श्रवण मरकाम, इंदर चोपड़ा, भाजपा के प्रदेश महामंत्री जगदीश रामू रोहरा,जिला अध्यक्ष प्रकाश बैस,भाजयुमो पूर्व जिला अध्यक्ष एवं पार्षद विजय मोटवानी सहित भाजपा के वरिष्ठ नेता मौजूद थे। पीएम मोदी ने चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा कि 19 को बस्तर में मतदान हुआ, देश के अन्य राज्य में मतदान हुआ और उस पहले चरण ने स्पष्ट कर दिया देश का मन साफहै, शक्तिशाली, मजबूत सरकार बनानी है। जनता-जनार्दन का भरोसा सिर्फऔर सिर्फभाजपा पर है।

इंडी गठबंधन पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उनके आपस में सिर फुटौव्वल चल रही है। दो दिन पहले झारखंड में इंडी गठबंधन की रैली में सरेआम एक दूसरे के सिर फोड़े गए, कपड़े फाड़े गए। कांग्रेस का शाही परिवार दिल्ली में रहता है। खुद की पार्टी का अता-पता नहीं है, अब हिंदुस्तान में वोट मांग रहे हैं। खुद तो वोट दे नहीं सकते, आपसे वोट मांग रहे है। मोदी ने आगे कहा कि छत्तीसगढ़ वह प्रदेश है, जहां कोयले की शक्ति, वन संपदा, स्टील की ताकत, विकसित भारत को तेज गति देने की ताकत है। 10 साल में मेरा काम देखा है, सेवा का मुझे मौका दिया है, कोई छुट्टी लिए बिना दिन-रात सेवा कर रहा हूं। मैंने अपने लिए कुछ नहीं किया। आपके लिए जीता रहा हूं, जूझता रहा हूं क्या कुछ नहीं हुआ 10 साल में। महासमुंद सहित अन्य जगह पर पांच नए मेडिकल कॉलेज स्वीकृत किए। घर-घर तक बिजली,पानी और सस्ती गैस कनेक्शन दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि तीसरी बार सरकार बनने पर छत्तीसगढ़ में रोड़,रेल, सिंचाई और इंटरनेट कनेक्टिविटी का तेजी से विकास किया जायेगा। मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने विकास को पटरी से उतारने का काम किया। कांग्रेस विकास के साथ नहीं चल सकती। कांग्रेस की जहां सरकार रही वहां हिंसक गतिविधियां हुई।कांग्रेस भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती रही है। हमारी सरकार ने भ्रष्टाचार और नक्सली हिंसा को काबू किया है।छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद और माओवाद को जड़ से समाप्त करके रहूंगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस के पीएम कहते थे 1 रुपए में 15 पैसे नीचे पहुंचता है। एक रुपए में 85 पैसे को कौन सा पंजा लूट लेता था? मोदी के अवसर दिया तो सबसे पहले लूट की दुकान पर ताला लगा दिया। कई करोड़ जनधन खाता खोला। छत्तीसगढ़ में पौने दो करोड़ खाता खोला गया। 34 लाख करोड़ रूपए जनता के खाते में भेजा गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि जो हकदार है उनके खाते में सीधे सीधे पैसे पहुंचाएं। 3 लाख करोड़ प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से किसानों के खाते में सीधे पहुंचाएं। जब तक देश में भाजपा की सरकार है आपके हक का पैसा आपके पास पहुंचता रहेगा कोई बिचौलिया नही आयेगा। कांग्रेस गरीब से सिर्फ विश्वासघात करना जानती है सोने के चम्मच लेके पैदा हुए लोग उनका दर्द नहीं समझ सकते। कांग्रेस ने 60 साल राज किए लेकिन कभी उन्हें गरीब लोगों की चिंता हुई। हमारी सरकार ने मुफ्त राशन योजना लागू की ताकि कोई गरीब परिवार भूखा ना सोए। आने वाले पांच साल तक गरीब परिवारों को मुफ्त राशन योजना का लाभ मिलेगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने कभी छोटे किसानों की चिंता नही की। छत्तीसगढ़ में हमारी सरकार ने किसानों को 3100 रू प्रति क्विंटल धान का और दो साल का बकाया बोनस देकर 3 महीने में मोदी की गारंटी को पूरा किया। तेंदूपत्ता संग्राहकों से की गई हर गारंटी को भाजपा सरकार पूरा करेगी। महतारी वंदन योजना लागू होने से आज बहनों के अकाउंट में सीधे पैसे जा रहे। 18 लाख गरीब परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिलेगा। एसटी, एससी और ओबीसी को सम्मान देकर जब भाजपा देश में आदिवासी राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ में आदिवासी मुख्यमंत्री, ओबीसी उप मुख्यमंत्री और मध्यप्रदेश में ओबीसी मुख्यमंत्री बनाया तो कांग्रेस को लोकतंत्र और संविधान पर खतरा नजर आने लगा है। 2024 के चुनाव में आपके सेवक नरेन्द्र मोदी को आपका आशीर्वाद चाहिए। आपके सपने पूरे करने के लिए मेरा पल पल आपके और देश के लिए है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंत में कहा कि मैं 24X7, 2047 के लिए खप जाऊंगा। एक सांसद ही नहीं चुनना है, देश का उज्ज्वल भविष्य चुनना है। राष्ट्र निर्माण का यह मौका ना गवाएं। पहले मतदान फिर जलपान, बीजेपी को दिया आपका एक वोट देश को विकसित बनायेगा। 26 अप्रैल को महासमुंद लोकसभा से रूपकुमारी चौधरी, कांकेर लोकसभा से भोजराज नाग और रायपुर लोकसभा से हमारे पुराने मित्र बृजमोहन अग्रवाल को भारी मतों से विजयी बनाना है। सभी अपना अपना बूथ जीतेंगे और भारी मतदान करवाएंगे।

इस अवसर पर पूर्व जिला अध्यक्ष ठाकुर शशि पवार,भाजयुमो जिला अध्यक्ष कैलाश सोनकर, कविन्द्र जैन,राजेन्द्र गोलछा, प्रेमलता नागवंशी,नागेन्द्र शुक्ला, विकल गुप्ता, रवि दुबे, डीपेंद्र साहू, अवनेंद्र साहू, मोहन नाहटा, अकबर कश्यप,रामगोपाल साहू, मनोहर मानिकपुरी,विनोद पांडे, निखिल साहू, राजेश नाथ गोसाईं,सुनील निर्मलकर, शैलेन्द्र साहू, मौर्यध्वज सेन सहित रायपुर, महासमुंद एवं कांकेर लोकसभा क्षेत्र से नागरिक गण, भाजपा के सभी मोर्चा, प्रकोष्ठ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गण बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़ की जनता-जनार्दन इस बार भी कमल खिलाने का संकल्प ले चुकी है : प्रधानमंत्री मोदी

रायपुर/सक्ति (आरएनएस)। सक्ति जनसभा में पीएम मोदी ने कहा, भाजपा को हमेशा भरपूर आशीर्वाद देने वाली छत्तीसगढ़ की जनता-जनार्दन इस बार भी कमल खिलाने का संकल्प ले चुकी है। जांजगीर-चाम्पा में इस जोश और जुनून को जीवनभर नहीं भूलूंगा। छत्तीसगढ़ वासियों ने मोदी की हर गारंटी पर मुहर लगाई है। इस दौरान मंच पर जांजगीर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विधानसभाओं से चुने गए भाजपा विधायकों के साथ-साथ, वित्त मंत्री ओपी चौधरी, सतनामी समाज के धर्मगुरु और आरंग से विधायक खुशवंत सिंह, छालीवुड कलाकार अनुज शर्मा, पूर्व नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल भी मौजूद रहे।

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे को लेकर स्वास्थ्य विभाग अलर्ट है। पीएम से मिलने वालों की कोरोना टेस्ट की जा रही है. इसके साथ ही सुरक्षा में तैनात लोगों की भी जांच की गई है। प्रोटोकॉल के मुताबिक 400 से ज्यादा लोगों की कोरोना टेस्ट किया गया. वहीं राजभवन में 200 से ज्यादा अधिकारी कर्मचारियों का टेस्ट हुआ है।

डॉक्टर मिथिलेश चौधरी ने बताया कि पिछले दो दिनों से प्रधानमंत्री से मिलने वाले, उनके आस पास सुरक्षा में तैनात, शासन प्रशासन के लोग, स्वास्थ्य विभाग की टीम और उनके लिए व्यवस्था, राजभवन में तैनात अधिकारी कर्मचारी की सैंपल ली गई है। पिछले 24 घंटे से लैब खुला है सैंपल लेने का कार्य जारी है। अभी तक लगभग 400 लोगों का सैंपल लिया गया था सभी की रिपोर्ट निगेटिव आई है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राजभवन में करेंगे रात्रि विश्राम

रायपुर (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो दिवसीय दौरे पर छत्तीसगढ़ पहुंचे हैं। सक्ती और धमतरी जिले में चुनावी सभा को संबोधित करने के बाद वे शाम को रायपुर पहुंचे। जहां वे राजधानी रायपुर स्थित राजभवन में रात्रि विश्राम करेंगे। यह पहला मौका है जब कोई प्रधानमंत्री राजभवन में रात बिता रहे हैं। राजभवन में उनकी सुरक्षा का खासा ख्याल रखा गया है। राजभवन से लगी सभी सड़कों को बंद कर दिया गया है। वहीं अब उनके रात्रि भोजन को लेकर भी जानकारी सामने आई है। मिली जानकारी के अनुसार पीएम मोदी पीएम सिंपल डाइट लेगे। वे रात के भोजन में दाल,रोटी एक सब्जी के साथ सलाद लेंगे। पीएम को रात का सिंपल खाना पसंद है। बताया जा रहा है कि राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन भी पीएम मोदी के साथ डिनर के लिए शामिल हो सकते हैं। राजभवन में उनकी सुरक्षा का खासा ख्याल रखा गया है। भोजन के साथ-साथ अन्य व्यवस्था में लगे सभी अधिकारी-कर्मचारियों का कोविड टेस्ट कराया गया है।

यह पहला मौका है जब कोई प्रधानमंत्री राजभवन में रात बिता रहे हैं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रात के भोजन के लिए पीएमओ यानी प्रधानमंत्री कार्यालय से मेनू राजभवन पहुंच गया है। प्रधानमंत्री रात में खाना बेहद सिंपल खाते हैं। दाल, रोटी, एक सब्जी और कुछ सलाद। इसी तरह का मीनू पीएमओ से आया है। रात का डिनर भी उनका तामझाम के साथ नहीं होगा। पता चला है, राजभवन ने उन्हें रात के डिनर का आग्रह किया था। मगर पीएमओ से कोई जवाब नहीं आया। समझा जाता है कि अब वे अकेले ही डिनर करेंगे। रात में वैसे राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन के साथ प्रधानमंत्री की मुलाकात है।

फिलहाल जेल में ही रहेंगे अरविंद केजरीवाल, कोर्ट ने 7 मई तक बढ़ाई न्यायिक हिरासत

नई दिल्ली (आरएनएस)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को आज दिल्ली की रोज एवेन्यू कोर्ट से झटका लगा है। कोर्ट ने केजरीवाल की न्यायिक हिरासत 7 मई तक बढ़ा दी है। उनके साथ के कविता की न्यायिक हिरासत भी 7 मई तक बढ़ाई गई है। अब 7 मई को अरविंद केजरीवाल की अगली पेशी होगी। सीएम केजरीवाल मंगलवार को जेल से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से न्यायिक हिरासत खत्म होने के बाद पेश हुए थे। इससे पहले आबकारी नीति घोटाले से संबंधित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में गिरफ्तार अरविंद केजरीवाल की दिल्ली की एक अदालत ने 23 अप्रैल तक न्यायिक हिरासत बढ़ा दिया था। 14 दिनों की न्यायिक हिरासत समाप्त होने के बाद केजरीवाल को जज कावेरी बावेजा की अदालत में पेश किया गया था।

2026 में पटरियों पर होगी पहली बुलेट ट्रेन, तैयारी पुख्ता : अश्विनी वैष्णव

दिल्ली (एजेंसी)। रेलवे और आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को कहा कि भारत की पहली बुलेट ट्रेन के लिए विभिन्न स्टेशनों के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है और हम 2026 में एक सेक्शन में पहली बुलेट ट्रेन चलाने के लिए तैयार हैं। एक साक्षात्कार में केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि अहमदाबाद-मुंबई रूट पर बुलेट ट्रेन का काम बहुत अच्छे से चल रहा है। इसके लिए 290 किलोमीटर से अधिक का काम पहले ही किया जा चुका है। इसके लिए आठ नदियों पर पुल बनाए गए हैं। 12 स्टेशनों पर काम चल रहा है। कई स्टेशन ऐसे हैं, जिसका काम पूरा होने वाला है। इसके साथ ही दो डिपो पर काम चल रहा है।

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि 2026 में बुलेट ट्रेन के पहले खंड के परिचालन के लिए काम बहुत तेज गति से चल रहा है। उन्होंने कहा कि बुलेट ट्रेन एक बेहद जटिल परियोजना है। इस पर काम 2017 में शुरू हुआ और डिजाइन को पूरा करने में लगभग ढाई साल लग गए। केंद्रीय मंत्री ने आईएएनएस को बताया कि इसका डिज़ाइन बहुत जटिल है क्योंकि जिस गति से ट्रेन को चलाना होता है, उसमें कंपन बहुत तेज़ होता है। अश्विनी वैष्णव ने विस्तार से बताया कि उन कंपनों को कैसे मैनेज करें? अगर हमें ऊपर से करंट लेना है तो वह करंट कैसे लें? उसकी गति, एरोडायनामिक्स आदि जैसी हर चीज को बहुत सावधानी से देखना होगा और उसके तुरंत बाद काम शुरू हो जाएगा।

केंद्रीय मंत्री ने बताया कि बीच में कोविड महामारी के कारण थोड़ा झटका लगा। इसके साथ ही अश्विनी वैष्णव ने कहा कि महाराष्ट्र में, उद्धव ठाकरे की सरकार ने अनुमति देने से इनकार कर दिया था, जिससे परियोजना में देरी हुई। लेकिन, काम अब बहुत अच्छी प्रगति पर है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बुलेट ट्रेन कॉरिडोर में 21 किमी लंबी सुरंग है, जिसमें 7 किमी समुद्र के नीचे का हिस्सा भी शामिल है। सुरंग का सबसे गहरा टनल 56 मीटर नीचे है। इन टनल के अंदर बुलेट ट्रेनें 300-320 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलेंगी।

जापान की शिंकानसेन तकनीक (जिसे बुलेट ट्रेन भी कहा जाता है) का उपयोग करके मुंबई और अहमदाबाद के बीच हाई-स्पीड रेल का निर्माण करना और लोगों के लिए तेज गति वाली परिवहन प्रणाली विकसित करना इसका उद्देश्य है।

भूपेश बघेल का सौतेला व्यवहार जनता भूली नहीं : विष्णुदेव साय

राजनंदगांव-रायपुर (आरएनएस)। राजनंदगांव प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का बड़ा बयान सामने आया है राजनंदगांव सीट पर चुनाव की प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा की कांग्रेस ने भूपेश बघेल जैसे चेहरे को प्रत्याशी बनाकर राजनांदगांव का चुनाव बेहद आसान कर दिया है। राजनंदगांव सीट वैसे भी भारतीय जनता पार्टी जीत रही थी परन्तु कांग्रेस ने जिसप्रकार सरकार से संगठन तक भ्रष्टाचार के आरोप झेल रहे,छत्तीसगढ़ में शराब घोटाला,गोबर घोटाला,राशन घोटाला,कोयला घोटाला,महादेव सट्टा एप घोटाला एवं डीएमएफ़ घोटाला करने वाले भूपेश बघेल को राजनंदगांव से प्रत्याशी बनाकर राजनंदगांव में एक प्रकार से हथियार डालने का कार्य किया है। श्री साय ने कहा की पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने छत्तीसगढ़ की जनता का हक़ छीनने का कार्य किया है,छत्तीसगढ़ की जनता को धोखा देने का कार्य किया है 7 छत्तीसगढ़ की जनता भूपेश के नेतृत्व को नकार चुकी है और अब राजनंदगांव की जनता भी छत्तीसगढ़ प्रदेश की जनता को धोखा देने वाले भूपेश बघेल को भारी मतों से हरायेगी, भूपेश बघेल का राजनांदगांव से सौतेला व्यवहार जनता भूली नहीं है।

सुप्रीमकोर्ट ने रामदेव को फिर लगाई फटकार

पूछा- क्या माफीनामे का साइज विज्ञापन जितना बड़ा था?

नई दिल्ली (आरएनएस)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को योग गुरु रामदेव और उनके सहयोगी बालकृष्ण और पतंजलि आयुर्वेद को भ्रामक विज्ञापन मामले में एक बार फिर से फटकार लगाई है। कोर्ट में पतंजलि की तरफ से कहा गया कि उन्होंने 67 अखबारों में विज्ञापन देकर माफीनामा छपवाया था। इसमें 10 लाख रुपये का खर्चा आया। इस पर कोर्ट ने उनसे पूछा कि क्या ये माफीनामा उतने ही साइज के थे, जितने साइज के आपके पहले वाले विज्ञापन थे।

कोर्ट ने ये भी पूछा कि क्या आप हमेशा इतने ही साइज का विज्ञापन छपवाते हैं। इस मामले में अब 30 अप्रैल को फिर से सुनवाई होनी है। इस सुनवाई में रामदेव और आचार्य बालकृष्ण को कोर्ट में हाजिर रहने को कहा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, रामदेव के वकील ने जवाब में कहा कि माफीनामे का साइज विज्ञापनों जितना बड़ा नहीं था, क्योंकि इसकी कीमत बहुत ज्यादा है, लाखों में। जस्टिस हिमा कोहली और जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की बेंच ने रामदेव और बालकृष्ण से कई सवाल पूछे।

सुनवाई के दौरान कोर्ट ने रामदेव से पूछा कि अपने क्या किया? तो उनके वकील मुकुल रोहतगी ने अदालत को बताया कि उन्हें 67 अखबारों में एड दिया, जिसमें दस लाख रुपये का खर्चा आया है। इस पर बेंच रामदेव और बालकृष्ण पर नाराजगी जाहिर करते हुए पूछा कि आपने अपना विज्ञापन कहां प्रकाशित कराया और इसमें इतना वक्त क्यों लगा। क्या ये विज्ञापन उतने ही साइज के थे, क्या आप हमेशा इतने ही साइज का एड देते हैं। इस पर अधिवक्ता ने कहा, नहीं, महोदय.. इसकी कीमत बहुत ज्यादा है.. लाखों रुपये है।

जमीन घोटाला मामला : हेमंत सोरेन को नहीं मिली राहत

जमानत याचिका पर जवाब के लिए ईडी ने कोर्ट से मांगा वक्त

रांची (आरएनएस)। जमीन घोटाले में जेल में बंद झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की ओर से दाखिल जमानत याचिका पर अपना पक्ष रखने और जवाब देने के लिए ईडी ने एक बार फिर अदालत से वक्त मांग लिया है। सोरेन की याचिका पर मंगलवार को एक बार फिर पीएमएलए की विशेष कोर्ट में सुनवाई शुरू होते ने ईडी ने जवाब देने के लिए दो हफ्ते के समय की मांग की। हेमंत सोरेन की ओर से सुप्रीम कोर्ट के वरीय अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने इसका विरोध किया। कोर्ट ने ईडी को एक हफ्ते का समय देते हुए 30 अप्रैल तक जवाब दाखिल करने को कहा है। मामले की अगली सुनवाई 1 मई को होगी। रांची के बड़गाईं अंचल में 8.66 एकड़ जमीन पर अवैध कब्जे और मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़े मामले में ईडी ने 31 जनवरी को हेमंत सोरेन को गिरफ्तार कर जेल भेजा था। ईडी ने मामले में 30 मार्च को अदालत में हेमंत सोरेन के अलावा जमीन के मूल रैयत राजकुमार पाहन, हेमंत सोरेन के करीबी विनोद कुमार, राजस्व उपनिरीक्षक भानु प्रताप प्रसाद और हिलेरियस कच्छप के खिलाफ चार्जशीट भी फाइल की है।

बस्तर के हेमचंद मांझी को पद्मश्री पुरस्कार, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने दी शुभकामनाएं

रायपुर (विसं)। नारायणपुर जिले के छोटे डोंगर के प्रख्यात वैद्यराज हेमचंद मांझी को महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हाथों पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित होने पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपनी शुभकामनाएं दी है।

अपने संदेश में उन्होंने कहा कि 5 दशकों से ज्यादा समय से बस्तर सहित पूरे छत्तीसगढ़ के ग्रामीणों को प्राकृतिक और किफायती स्वास्थ्य सेवा प्रदान कर रहे अबूझमाड़ के प्रख्यात वैद्यराज श्री हेमचंद मांझी जी को महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी के हाथों से पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित होने पर मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में उनका नि:स्वार्थ सेवाभाव हम सबके लिए प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है।

गौरतलब है कि नारायणपुर के छोटे डोंगर में जन्मे हेमचंद मांझी उस समय से लोगों का इलाज कर रहे हैं जब उस क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं थी। अपने ज्ञान और सेवाभाव की बदौलत उन्होंने लोगों का इलाज शुरू किया और 5 पिछले दशकों से मरीजों का उपचार कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ सहित आसपास के राज्यों एवं विदेशों में रहने वाले पीड़ित मरीज भी छोटे डोंगर पहुंचकर इलाज कराते हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, बुधवार 24 अप्रैल 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

प्रदेश के धर्मस्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल के निवास पर मना श्री हनुमान जन्मोत्सव

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री हनुमान जयंती के पावन अवसर पर प्रदेश के धर्मस्व एवं शिक्षा मंत्री बृजमोहन अग्रवाल के निवास पर भजन कीर्तन के साथ हनुमान चालीसा पाठ एवं सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। इस मौके पर निवास में ही विराजित अभिमंत्रित श्री हनुमान जी के प्रतिमा की श्री अग्रवाल ने सपरिवार विधि विधान से पूजा अर्चना की। इस आयोजन में सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

मां कामाख्या धर्मादा ट्रस्ट द्वारा हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में शरबत वितरण

धमतरी (विश्व परिवार)। मां कामाख्या धर्मादा ट्रस्ट के तत्वाधान में आज रुद्री रोड धमतरी में हनुमान जयंती के उपलक्ष्य में राहगीरों को शरबत वितरण किया गया। ठंडा नींबू की शरबत पीकर लोग प्रसन्न हुए, काफी संख्या में लोग आते गए और ट्रस्ट के द्वारा किए गए इस सेवा कार्य की सराहना किए। आज के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नामदेव जी, वृंदावन गुप्ता जी, साथ में भाऊराम, श्रीमती सरोज तिवारी, पूनम तिवारी वाचा मजूमदार, सुनैना मिश्रा ,अनिता पांडे, श्रीमती प्रजापति सहित समस्त पदाधिकारी इस कार्य में अपना सहयोग दिए। जिला अध्यक्ष श्रीमती कमलेश गुप्ता के द्वारा संस्था के सभी पदाधिकारियो का अभार किया गया।

राज्य से बाहर गए ग्रामीण मतदाताओं को रिझाने जिला प्रशासन चला रहे है 'घर आजा संगी अभियान'

रोजगार सहायक, सचिव एवं अन्य कर्मचारियों के जरिये वीडियो कॉल करके ग्रामीणों को कर रहे है मतदान हेतु आमंत्रित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के.एल चौहान के निर्देश में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा राज्य से बाहर गए मजदूरों को शत प्रतिशत मतदान हेतु प्रेरित करने के लिए 'घर आजा संगी अभियान' की शुरूआत की गई है। जिसके तहत गांव-गांव की सचिव, रोजगार सहायक ऐसे व्यक्तियों को चिन्हाकित कर समान्य कॉल एवं वीडियों कॉल करके मतदान हेतु सादर आमंत्रित कर रहे है। जिला प्रशासन का अपील की जा रही है कि ग्रामीण अपने घर आकर 7 मई 2024 को मतदान करने अपने संबंधित मतदान केंद्र में जाए और लोकतंत्र के इस महान पर्व में अपनाया भागीदारी निभाएं। कलेक्टर श्री चौहान ने जिलेवासियों से अपील करते हुए ग्रामीणों से कहा कि जो भी अच्छे मजदूरी की तलाश में बाहर राज्य गए और उनका यदि उस राज्य के मतदाता सूची में नहीं है तो वह अपने गृह राज्य आकर मतदान में अवश्य भाग लेवें इसके साथ ही घर परिवार, आस-पड़ोस और अपने से जुड़े सभी लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित करें। गौरतलब है कि लोक सभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्वीप मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर जिले में मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

कलेक्टर ने मतदान प्रतिशत बढ़ाने तथा मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था के संबंध में ली बैठक

मतदान केन्द्रों में पेयजल, छांव, रैम्प, प्रकाश, फर्नीचर सहित अन्य बुनियादी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के दिए निर्देश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के एल चौहान ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत मतदान का प्रतिशत बढ़ाने तथा मतदान दिवस में मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के संबंध में अधिकारियों की बैठक ली। कलेक्टर श्री चौहान ने कहा कि मतदान केन्द्रों में पेयजल, छांव, रैम्प, प्रकाश, फर्नीचर सहित अन्य बुनियादी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गर्मी को ध्यान में रखते हुए मतदान केन्द्रों में विशेष तौर पर व्यवस्था करने की जरूरत है, इसके लिए प्रयास करें। मतदान केन्द्र में छांव की व्यवस्था के लिए स्थानीय स्तर पर टेंट के साथ ही पत्तियों से बने इकोफ्रेंडली मंडप बनवाएं। मतदान केन्द्रों में साफ-सफाई की व्यवस्था होनी चाहिए। सभी आवश्यक व्यवस्था के लिए अधिकारी पहले से ही मानिटरिंग करें और सभी तैयारी रखें। कलेक्टर ने कहा कि शिशुवती माताओं, दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिकों को लंबी कतार में खड़ा नहीं होना पड़े, इसके लिए उनके लिए अलग से ग्रीन कॉरिडोर बनाएं। दिव्यांग एवं बुजुर्ग मतदाताओं के लिए मतदान केन्द्रों में रैम्प होना चाहिए तथा व्हील चेयर की व्यवस्था होनी चाहिए। दिव्यांगजन एवं बुजुर्गों की मदद के लिए एनसीसी, स्काउट गाईड, एनआरएलएम की महिलाएं मतदान केन्द्र में उपस्थित रहें।

कलेक्टर ने मतदान दलों के लिए वाहन की व्यवस्था के संबंध में जानकारी ली तथा मतदान केन्द्र पहुंच मार्ग के संबंध में सभी को अवगत होने के लिए कहा। स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आवश्यक दवाइयों का किट भी उपलब्ध होना चाहिए। उन्होंने मतदान दलों के भोजन के संबंध में व्यवस्था करने के निर्देश दिए। मतदान दलों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए कहा। जिन ग्रामों में दिव्यांगजन है, वहां दिव्यांग रथ होना चाहिए तथा ई-रिक्शा की व्यवस्था होनी चाहिए। हर गांव में प्रकाश की समुचित एवं वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए। जिला पंचायत सीईओ दिव्या अग्रवाल ने कहा कि गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए मतदान केन्द्रों में ओआरएस घोल उपलब्ध रहे। अधिकारियों के पास मितानिनों का नंबर होना चाहिए। आदर्श मतदान केन्द्र थीम के अनुसार बनाएं जाएंगे। संगवारी एवं युवा मतदान केन्द्र अच्छे से सजाना है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सेल्फी जोन बनाएं तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वस्तुओं का भी उपयोग करें।

प्रयास आवासीय विद्यालयों के कक्षा 9वीं में प्रवेश हेतु 17 मई तक ऑनलाईन आवेदन आमंत्रित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री बाल सुरक्षा योजनांतर्गत प्रदेश के आदिवासी उपयोजना क्षेत्र तथा नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में स्थित शालाओं में अध्ययनरत प्रतिभावान विद्यार्थियों को कक्षा 9वीं से 12 वीं तक उतकृष्ट स्कूली शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर की मेडिकल, इंजीनियरिंग, सीए, सीएमए, क्लैट तथा एनडीए की प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने हेतु सघन तैयारी करायी जाती है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राज्य में प्रयास आवासीय विद्यालय स्थापित किए गए है। सत्र 2024-25 में प्रयास आवासीय विद्यालयों के कक्षा 9वीं में प्रवेश हेतु ऑनलाईन आवेदन मंगाए गए हैं। ऑनलाईन आवेदन भरने की प्रारंभिक तिथि 23 अप्रैल 2024 है तथा आवेदन अंतिम तिथि 17 मई को रात्रि 12.00 तक भरे जा सकते हैं। ऑनलाईन भरे गये आवेदन पत्र में त्रुटि सुधार 18 मई से 20 मई 2024 तक किया जाएगा। प्रवेश हेतु प्राक्रयन परीक्षा तिथि 09 जून 2024 निर्धारित है। ऑनलाईन आवेदन पत्र भरने एवं अन्य जानकारी हेतु लिंक एचटीटीपीएस डबल स्लेस एकलव्य डॉट सीजी डॉट एनआइसी डॉट इन स्लेस पीआरएसएमएस स्लेस स्टूडेंट डेश एडमिशन डेश डिटेल https://eklavya.cg.nic.in/PRSMS/Student-Admission-Detail पर देख सकते है।

लोकसभा निर्वाचन 2024 : बरसते पानी के बीच शत-प्रतिशत मतदान के लिए कलेक्टर के नेतृत्व में निकाली गई टार्च रैली

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। लोक सभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्वीप मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कर जिले में मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में स्वीप मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत आज जिला मुख्यालय में टार्च रैली का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 2 किलोमीटर मार्ग को कलेक्टर के एल चौहान के नेतृत्व में अधिकारी कर्मचारी के साथ बरसते पानी के बीच पैदल चलकर पूरी की गई। इस रैली में नगर पालिका परिषद बलौदाबाजार से संबधित महिला स्व सहायता समूह से जुड़ी महिला, दिव्यांग महिला, छात्र, छात्राएं, शिक्षक, आमजन, खिलाड़ी, प्रबुद्ध नागरिक, सहित अधिकारी कर्मचारी, मिडिया प्रतिनिधी बड़ी संख्या में शिरकत किए। इसके साथ ही रैली अंबेडकर पहुंचने पर कलेक्टर श्री चौहान ने सभी को शत प्रतिशत मतदान के लिए शपथ दिलाई।

कलेक्टर ने श्री चौहान ने कहा किऐसे तो गर्मी का मौसम है फिर भी यदि ऐसे 7 मई को यदि बरसात भी हो तो भी हमें मतदान करना है। इसी संदेश को लेकर आज हमने टार्च रैली निकाली है। उन्होंने महिला, युवाओं और पुरुषों को अधिक से अधिक संख्या में मतदान केंद्र पहुंचने और लोकतंत्र के इस महापर्व में भागादारी करने की अपील की है।

उक्त टॉर्च रैली जिला मुख्यालय में गार्डन चौक, से प्रारंभ होकर, बस स्टैंड, दशहरा मैदान होते हुए अंबेडकर चौक में समाप्त हुआ। इस मौके पर जिला पंचायत सीईओ सुश्री दिव्या अग्रवाल उप जिला निर्वाचन अधिकारी आर आर दुबे, तहसीलदार राजू पटेल, जनपद पंचायत सीईओ श्री मंडावी, सीएमओ श्री भोई, अन्य सभी विभागों के जिला अधिकारी गण सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी गण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पीएम नरेंद्र मोदी के कार्यों से प्रभावित होकर ग्राम भालुचुवा के तीन पंच सहित दर्जनों लोगों ने किया भाजपा में प्रवेश

कवर्धा (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव में एक ओर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता लगातार जनसम्पर्क कर तीसरी बार मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे है वही दूसरी ओर अपना कुनबा बढ़ाने में भी लगे हुए है। छत्तीसगढ़ विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी को मिली बड़ी सफलता के बाद लगातार काँग्रेस में भगदड़ मची हुई है लोग बहुत संख्या में भारतीय जनता पार्टी एवं मोदी जी के कार्यो से प्रभावित होकर भाजपा में प्रवेश कर रहे हैं। इसी कड़ी में भोरमदेव मंडल के ग्राम भालूचुवा से तीन पंच सहित दर्जनों लोगों ने जिला अध्यक्ष अशोक साहू, महामंत्री संतोष पटेल श्रीकान्त उपाध्याय के समक्ष भाजपा की सदस्यता ली। जिला अध्यक्ष अशोक साहू ने भाजपा पट्टा पहनाकर ग्रामीणों को भाजपा में शामिल किया।

चन्द्र कुमार दिवाकर पंच, सरदार सिंह लहरे,कमल दास लहरे पंच, राम भरोसे लहरे पंच,बालक दास, हीरा सिंह,अगर दास, राजकुमार डहरे, ग्राम पटैल, चैत राम बंजारे,रोहित दिवाकर ने भाजपा प्रवेश कर पार्टी के प्रति अपना विश्वास जताया।

कार्यालय संपदा अधिकारी

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, संपदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर
प्रथम एवं पंचम तल, व्यवसायिक परिसर (दक्षिण-पुर्व कार्नर), सेक्टर-27, नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094 E-mail ID:- em-zone2@yahoo.com

// आम सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नालिखित हितग्राहियों को लीज में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा आबंटित है, उक्त भवन/फ्लैट को फ्री-होल्ड के लिए निर्धारित प्रारूप में आवेदन प्रस्तुत किया गया है, जिनका फ्री-होल्ड संपरिवर्तन किया जाना है।

अत: इस आम सूचना प्रकाशन की तिथि से 15 दिवस के अंदर कोई आपत्ति हो तो मय दस्तावेज के साथ अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में कार्यालयीन दिवस में प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के पश्चात कोई भी आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

क्र.	आबंटी का नाम	पिता/पति का नाम	भवन क्रमांक	कॉलोनी का नाम
1	श्रीमति कृष्णा चटर्जी	श्री स्वपन कुमार चटर्जी	स्वतंत्र भवन क्रमांक-438	अटल आवास योजना बेलभाठा अभनपुर
2	श्रीमति किरण साहू तिवारी	श्री ओकार प्रसाद साहू	स्वतंत्र भवन क्रमांक-473	अटल आवास योजना बेलभाठा अभनपुर
3	श्रीमति नंदिनी शुक्ल	श्री राजेश शुक्ला	स्वतंत्र भवन क्रमांक-518	अटल आवास योजना बेलभाठा अभनपुर

संपदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

भाजपा प्रदेश महामंत्री भरत वर्मा का भूपेश पर बड़ा हमला

भूपेश बघेल को वोट देना यानि छत्तीसगढ़ को लूटने वाले नवाज खान, सौम्या चौरसिया, समीर विश्नोई को वोट देना

सौम्या पर मौन रहकर भूपेश ने भ्रष्टाचार स्वीकारा, सौम्या, नवाज, अकबर, ढेबर सबके मुखिया भूपेश बघेल

कवर्धा (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री भरत वर्मा ने आज कांग्रेस प्रत्याशी भूपेश बघेल पर तीखा हमला करते हुए कहा कि पूर्व अधिकारी सौम्या चौरसिया की गिरफ्तारी पर वे खामोश क्यों है? बार-बार सौम्या चौरसिया की जमानत रद्द हो रही हैं वह आपकी उपसचिव रही हैं ऐसे यह संभव ही नहीं हैं की इस भ्रष्टाचार में आप लिप्त नहीं हैं।

श्री वर्मा ने कहा कि भूपेश बघेल बताए छत्तीसगढ़ की गरीब जनता से हुई लूट में कितना प्रतिशत भूपेश बघेल का हैं, और कितना प्रतिशत सौम्या का, भूपेश बघेल बताए? चाहे नवाज खान हो या सौम्या चौरसिया या फिर अनिल टूटेजा या फिर विनोद वर्मा या आपके विभाग के अधिकारी समीर विश्नोई ये सभी भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों में या तो जेल में हैं या तो बेल पर और इनसे आपका सीधा संबंध रहा है तो क्या आप इन सबके ऊपर लगे आरोपों में हिस्सेदार नहीं हैं? उन्होंने भूपेश बघेल से सीधा प्रश्न किया कि अगर हिस्सेदारी नहीं है, तो इन सबकी वकालत क्यों की ? लगातार आपके बयान आते रहें की आप इनके साथ में खड़े रहें।

जब शुरुवाती दौर में सौम्या चौरसिया, समीर विश्नोई की गिरफ्तारी हुई तब आपने चीख-चीख कर उनके निर्दोष होने के दावे किए लेकिन आज लगभग 16 से 18 महीने हो गए उन्हे कोर्ट ने जमानत नहीं दी हैं, अब मौन क्यो है? मुख्यमंत्री रहते अपनी ही जनता से लूट पर अपने कार्यवाही करने की जगह भ्रष्टाचारियों का साथ दिया क्या आप इस पर शर्मिंदा नहीं हैं? यह सवाल करते हुए श्री भरत वर्मा ने कहा ये सभी तथ्य बताते हैं की छत्तीसगढ़ के आदिवासियों, अनुसूचित जाति के साथियों पिछड़े वर्ग के लोगों के हक पर जो डाका डाला गया, उसमें भूपेश बघेल भी एक पार्टनर रहे, ऐसे में भूपेश बघेल को वोट देना यानि छत्तीसगढ़ को लूटने वाले नवाज खान, सौम्या चौरसिया, समीर विश्नोई को वोट देना.

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./10727/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 23-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10727
वार्ड का नाम- 4 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 4 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104B0349A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHIV KUMAR, AJAY KUMAR, VIJAY KUMAR, MANGAL SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANGAL SINGH, TIJU SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **AJAY KUMAR JANGHEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DULAR JANGHEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **PARIWARIK BATWARA NAMA**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./10726/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 23-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10726
वार्ड का नाम- 4 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 4 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR1040349B** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHIV KUMAR, AJAY KUMAR, VIJAY KUMAR, MANGAL SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANGAL SINGH, TIJU SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHIV KUMAR JANGHEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DULAR JANGHEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **PARIWARIK BATWARA NAMA**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)

संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./10725/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 23-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10725
वार्ड का नाम- 4 - यतियतन लाल वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 4 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104B00349** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHIV KUMAR, AJAY KUMAR, VIJAY KUMAR, MANGAL SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANGAL SINGH, TIJU SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. KOUSHLYA JANGHEL 2. ROHAN KUMAR JANGHEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VIJAY KUMAR JANGHEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **PARIWARIK BATWARA NAMA**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /10836/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 23-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10836
वार्ड का नाम- 1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 1 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801L00843** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAJBIR SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BALDEV SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUSHEEL KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PREMCHAND** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर
(छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि अटल आवास योजनांतर्गत **मुनगी फेस-02** जिला- रायपुर में स्थित **भवन क्रमांक-121, श्रीमती हेमलता ठाकुर पति श्री प्रेम सिंह ठाकुर** के नाम पर आबंटित है। उक्त आबंटी **श्रीमती हेमलता ठाकुर** की मृत्यु दिनांक **19.10.2023** को हो जाने के कारण उक्त आबंटी के उत्तराधिकारी सुपुत्र **श्री राहुल सिंह ठाकुर पिता श्री प्रेम सिंह ठाकुर,** निवासी- रोटरी नगर टाटीबंध रायपुर, तह. व जिला-रायपुर (छ.ग.) के नाम पर नामांतरण करने के लिये इस कार्यालय में अपना आवेदन पत्र, शपथ पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, अन्य उत्तराधिकारी का सहमति पत्र, आधार कार्ड की छायाप्रति एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के **नामांतरण के संबंध में** किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,

सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर
(छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि दीनदयाल आवास योजनांतर्गत **सड्डू,** रायपुर में स्थित भवन क्रमांक **एल.आई.जी.-975, श्री दिलीप कुमार सोनवानी पिता श्री नारायण दास सोनवानी** के नाम पर इस कार्यालय का नामांतरण आदेश **क्रमांक-01** दिनांक **02.01.2014** द्वारा नामांतरित किया गया है। नामांतरी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक **11.09.2017** को सेलडीड/ अनुबंध पंजीकृत उपरांत **नामांतरी श्री दिलीप कुमार सोनवानी पिता श्री नारायण दास सोनवानी** की मृत्यु दिनांक **11.10.2023** को हो जाने के कारण उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती मंजूला सोनवानी पति स्व. श्री दिलीप कुमार सोनवानी** निवासी- एल.आई.जी.-975, सेक्टर-06, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, सड्डू रायपुर तहसील व जिला रायपुर (छ.ग.) के द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, सहमति पत्र, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर उक्त भवन को अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु आवेदन किया गया जिसके अनुसार नामांतरण किया जाना है।

अत: उक्त भवन के **नामांतरण के संबंध में** किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

शारीरिक-मानसिक स्वस्थता और मजबूत आत्मबल के लिए योग जरूरी : कलेक्टर

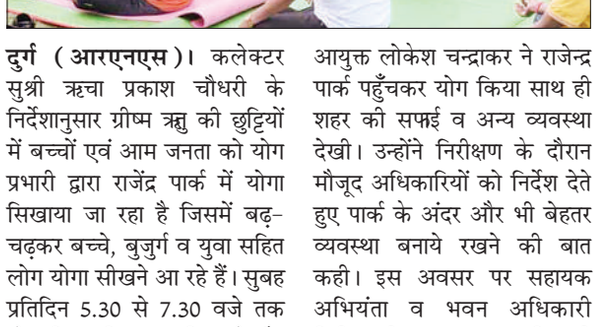

दुर्ग (आरएनएस)। कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी के निर्देशानुसार ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों में बच्चों एवं आम जनता को योग प्रभारी द्वारा राजेंद्र पार्क में योगा सिखाया जा रहा है जिसमें बढ़-चढ़कर बच्चे, बुजुर्ग व युवा सहित लोग योगा सीखने आ रहे हैं। सुबह प्रतिदिन 5.30 से 7.30 वजे तक योग क्रिया नि:शुल्क सिखाई और बताई जा रही है। जिला योग प्रभारी ने शहरवासियों से अपील की है कि अपने बच्चों को ग्रीष्म ऋतु मे योगा सीखने हेतु भेजें क्योंकि योगा से मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की बीमारी ठीक होती है और शरीर निरोग रहता है। शरीर के निरोग रहने से मन भी निरोग रहता है। सभी लोगों को योगा करना चाहिए। आज आयुक्त लोकेश चन्द्राकर ने राजेन्द्र पार्क पहुँचकर योग किया साथ ही शहर की सफाई व अन्य व्यवस्था देखी। उन्होंने निरीक्षण के दौरान मौजूद अधिकारियों को निर्देश देते हुए पार्क के अंदर और भी बेहतर व्यवस्था बनाये रखने की बात कही। इस अवसर पर सहायक अभियंता व भवन अधिकारी गिरीश दीवान,स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, उद्यान प्रभारी अनिल सिंह मौजूद रहें। योगा शिविर के अवसर पर आयुक्त ने शारीरिक-मानसिक स्वस्थता और मजबूत आत्मबल के लिए योग को जरूरी बताया। प्रशिक्षक और योगाचार्य ने योग के महत्व व लाभ के बारे में जानकारी दी। नि:शुल्क राजेन्द्र पार्क में विभिन्न मुद्राओं में योगासन कराये गये।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

मामला-चल रहे करोड़ों रूपये के सड़क निर्माण में नियमों की उड़ाई जा रही धज्जियां

प्रधानमंत्री मोदी का संदेश : न खाऊंगा, न खाने दूंगा, लोनिवि के अधिकारियों पर इसका असर नहीं

■ निर्माण पूर्ण होने के पहले ही सड़कों में दरार, हो रहा

धमतरी । विश्व के क्षितिज पर भाजपा को नंबर वन पर लाने वाले देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि न मैं खाऊंगा, न मैं खाने दूंगा.. जिससे सारे देश में भ्रष्टाचारियों के पैरों की जमीन खिसक गई और वे इसका पालन करते हुए नजर आ रहे हैं। जिला धमतरी में आज देश के प्रधानमंत्री का प्रथम बार आगमन हो रहा है और उनसे काफी आशाएं भी जिलेवासियों को है किंतु जिले में एक विभाग ऐसा है जहां न खाऊंगा, न खाने दूंगा.. की चेतावनी असर नहीं कर रही है और वे भ्रष्टाचार की गंगा में डुबकी लगाकर दोनों हाथों से दौलत लूटने की कार्यवाही कर रहे हैं। मामला श्यामतराई से संबलपुर तक के सड़क नवनिर्माण से दिया जा सकता है जहां ठेकेदार और अधिकारी मिलकर वर्षों बाद बन रही इस सड़क में नियम विरूद्ध कार्य कर खा रहे हैं, और खिला रहे हैं.. जिससे उक्त सड़क की गुणवत्ता पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। हद तो यह है कि जागरूक नागरिकों की शिकायत मीडिया में सुर्खियां बनी हुई है। इसके बाद भी संबंधित अधिकारी एवं ठेकेदार पर अब तक राजधानी में बैठे लोक निर्माण विभाग के आला अधिकारियों पर जूं तक नहीं रेंगी। पिछले वर्ष अत्यधिक वर्षा होने के कारण जर्जर सड़कें व्यापक रूप से गड्ढों में तब्दील हो गई जो बारिश के पानी से दुर्घटनाओं के जननी के रूप में अनेक लोगों को अपने चपेट में लिया है। इसमें चलने वाली वाहनों ने अनेक ऐसे राहगीरों को न सिर्फ क्षति पहुंचाई है अपितु सड़कों में भरे बारिश के पानी से राहगीरों के कपड़े भी खराब होते रहे। इसी सड़क से सैकड़ों गाड़ियां प्रतिदिन विशाखापट्नम से लेकर कलकत्ता तक का सफर तय करती रही। दुर्घटनाओं को लेकर शहर के जागरूक नागरिकों ने आवाज उठाई और सड़कों का निर्माण होने की आवाज बुलंद की। पूर्ववर्ती सरकार

के समय इन मांगों को पूरा न करते हुए पेचवर्क और सुधार कार्य के नाम पर करोड़ों रूपये की राशि आबंटित की गई। लेकिन सड़क का सुधार कार्य जीर्णोद्धार के नाम पर उक्त राशि का ठेकेदार, अधिकारी ने बंदरबांट कर लिया। यही स्थिति कमोवेश समूचे जिले में है जहां लोक निर्माण विभाग के बेलगाम अधिकारी दिमकीय प्रवृत्ति से शासकीय योजनाओं को चरते नजर आ रहे हैं। पेचवर्क, सुधार कार्य के बाद जब प्रदेश में सत्ता परिवर्तन हुआ तो प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में विभिन्न विभागों के मंत्रियों की ताजपोशी की गई। इनमें लोक निर्माण विभाग मंत्री का पद उपमुख्यमंत्री अरूण साव को आबंटित किया गया जिन्होंने पदभार संभालते ही दो-टूक शब्दों में कहा था कि निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरती जानी चाहिये। लेकिन इन बातों को स्थानीय लोक निर्माण विभाग अधिकारी एवं ठेकेदार पालन नहीं कर सड़क के निर्माण में भारी लापरवाही बरत रहे हैं। जागरूक नागरिकों ने बताया कि लगभग 10 वर्षों बाद सड़क निर्माण की मांग को प्रदेश के मुख्यमंत्री साय ने गंभीरता से लेते हुए श्यामतराई से संबलपुर तक सड़क के निर्माण हेतु 16 करोड़ 84 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की और इसके लिये पूर्व में डाले गये टेंडर को स्वीकृत किया गया। निविदा के समय कितने ठेकेदारों ने उक्त कार्य के लिये निविदा भरी, और कितने एबव पर निर्माणाधीन एजेंसी को कार्य दिया गया, यह भविष्य के गर्त में छुपा हुआ है। लेकिन एक बात तय है कि इस ठेकेदार को स्थानीय विभाग इतना तवज्जो देता है कि उससे ही अधिकांश कार्य लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत दिये जाते हैं, जो कि एक पहेली बना हुआ है। इस ठेकेदार के द्वारा पेचवर्क, निर्माण कार्य, में अधिकारियों से तालमेल कर भारी गोलमाल किये जाने की जानकारी भी प्राप्त हुई है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण नगरी, मगरलोड, बालोद क्षेत्र के कार्य से दिया जा सकता है। निविदा के समय इस ठेकेदार ने जो निविदा डाली, उसकी शर्तों का पालन करना नितांत आवश्यक है किंतु जब कार्य प्रारंभ किया गया तो उसके पूर्व स्थल पर कहीं भी सूचना बोर्ड लगाकर शासन के निर्देशों का पालन नहीं किया गया और चुपचाप राते के अंधेरे में 16 करोड़ 84 लाख रूप्ये की लागत से बनने वाली इस सड़क का निर्माण कार्य बिना सफाई, बेसकोट बिना डाले शुरू कर दिया गया। जब इसकी शिकायत हुई और मामला मीडिया की सुर्खियों में आया तब प्रथम चरण के निर्माण कार्य के समाप्ति पश्चात अधूरा सूचना बोर्ड लगा दिया गया और सड़क निर्माण में की जा रही खामियों को दबाने के लिये अधिकारियों तक को बाध्य किया गया जिन्होंने जनसंपर्क विभाग से एक समाचार प्रेषित करवाकर दावा किया कि सड़कों का निर्माण नियमानुसार किया जा रहा है। इसके कुछ दिन बाद सोरिद और सिहावा चौक पर गड्ढे और दरार उत्पन्न हो गये। धमतरी शहर में आज देश के प्रधानमंत्री मोदी का आगमन हो रहा है। उनसे जिलेवासियों को काफी आशाएं हैं। जैसा कि उनके आने के पूर्व ही जिला अस्पताल में आईसीयू कक्ष का शुभारंभ होने जा रहा है जिससे जिलेवासियों को किसी निजी अस्पतालों का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। लेकिन साथ ही साथ जिले में व्याप्त भ्रष्टाचारियों के हौसले को पस्त करने के लिये सड़क निर्माण में जिस तरह कोताही बरती जा रही है, उसकी जांच बहुत ही आवश्यक है, ऐसा जागरूक नागरिकों के द्वारा कहा जा रहा है। चूंकि पूर्व में भी इस ठेकेदार ने नगरी, सिहावा, मगरलोड, दुगली, सिंगपुर, बालोद इत्यादि क्षेत्रों में लोक निर्माण विभाग के अंतर्गत सड़कों का निर्माण किया है जिसका आज स्थल पर अता-पता नहीं है। इनके कार्य की पिछले तीन साल से जांच की जाती है तो इस ठेकेदार के द्वारा कराये गये निर्माण कार्यों में भारी भ्रष्टाचार होने की जानकारी मिलेगी। इस ठेकेदार के प्रति लोक निर्माण विभाग के अधिकारी क्यों इनके निर्माण कार्यों में त्रुटियां नहीं निकालते जिसके संबंध में पता चला है कि उक्त ठेकेदार अधिकारियों पर अपनी पहुंच का दावा करता है। जब पूर्ववर्ती सरकार थी तब भी वह दावा करता नजर आता था और अब जब प्रदेश में सत्ता परिवर्तन हो गया है तब भी इसका दावा जारी है। अब देखना है कि देश के प्रधानमंत्री श्री मोदी का न खाऊंगा, न खाने दूंगा के संदेश का पालन लोक निर्माण विभाग के अधिकारी किसी तरह करते हैं? यह समय बतायेगी।

देश के तमाम संपन्न रामभक्त गरीब और कमजोर तबके के श्रद्धालुओं को कराएं भगवान रामलला के दर्शन : प्रवीण झा

बिलासपुर। जिले से 1008 भक्तों को अयोध्या ले जाकर रामलला का दर्शन कराने वाले फिल ग्रुप के चेयरमैन प्रवीण झा की श्रद्धालुओं के बीच ही नही बल्कि समाज में भी जोरदार सराहना हो रही है। समाजसेवी द्वारा की गई व्यवस्था में एक दिन पहले बस और कारों से निकले श्रद्धालु बुधवार रामनवमी के शुभ अवसर पर प्रयागराज पहुंचकर संगम स्नान किया इसके बाद अयोध्या जिले में भव्य रूप से स्थापित श्री रामलला के सभी ने दर्शन किए। हनुमान गढ़ी जाकर भगवान हनुमान के भी सभी ने दर्शन प्राप्त किए। 17 अप्रैल 2024 रात्रि भोजन के बाद अयोध्या से बिलासपुर के लिए सभी ने प्रस्थान किया। 18 अप्रैल 2024 रात्रि 10:30 बजे बिलासपुर के पुलिस ग्राउंड में सभी 1008 भक्तों की टोली भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद सकुशल पहुंच गई। बिलासपुर प्रेस क्लब में

सोमवार को पहुंचे श्रद्धालुओं ने बताया कि तीन दिनों की इस यात्रा में भक्तों को किसी प्रकार की कोई भी असुविधा नहीं हुई।भक्तों ने कहा कि जगह जगह पर नाश्ता,भोजन के अलावा रुकने ठहरने की उत्तम व्यवस्था की गई थी। बड़े पैमाने पर अयोध्या पहुंचे श्रद्धालुओं को खासकर रामनवमी के दिन बहुत आसानी से भगवान के दर्शन हो गए ये सबसे बड़ी बात है। यह सब फिल ग्रुप के मैनेजमेंट और भगवान की कृपा एवं आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। पत्रकारों को उन्होंने बताया कि श्री झा और उनकी टीम हर एक श्रद्धालु की चिंता करते रहे। खाने पीने से लेकर आराम और व्यवस्था पर उन्होंने कोई कमी नही की। राम मंदिर निर्माण के प्रथम रामनवमी के अवसर पर किसी निजी संस्था या व्यक्ति के द्वारा 1008 भक्तों को पूरी सुविधा और देखरेख के साथ दर्शन कराना देश में पहला माना जा रहा है जिसके लिए सभी श्रद्धालुओं ने प्रवीण झा को श्रवण कुमार कहा और उनकी पूरी सेवा टीम को इसका श्रेय दिया है। इस दौरान प्रेस क्लब में मौजूद फिल ग्रुप के चेयरमैन समाजसेवी प्रवीण झा ने देश के कोने-कोने मे रहने वाले सभी संपन्न राम भक्तों से इसी तरह की सुविधा देकर कमजोर और गरीब तबके के श्रद्धालुओं को यात्रा कराकर भगवान श्री राम का दर्शन कराने की अपील की है ताकि ऐसे लोगों को भी इसका लाभ मिले जो कभी सुविधायुक्त दर्शन की कल्पना तो छोड़िए वहां तक पहुंचने की उम्मीद भी नहीं करते।

सहायक डाक अधीक्षक को दी गई भावभीनी विदाई

कोरबा। कोरबा जिले में सहायक डाक अधीक्षक कोरबा जी.आर. देवांगन को बिलासपुर स्थानांतरित होने पर उप डाकघर भैसमा के अंतर्गत आने वाले सभी शाखा डाकघर एवं उप डाकघर मिलकर भैसमा उप डाकघर में विदाई दी गई। सहायक डाक अधीक्षक को पहले प्रमोशन में जगह मिली थी। इसके पूर्व वे संभागीय उप निरीक्षक जमनीपाली में थे। वे इन स्थानों में रहकर सभी कर्मचारियों से टीम भावना लेकर काम लेते रहे एवं ऊपर आए लक्ष्य को पूरा कराए। उनका

कार्यकाल इन क्षेत्रों में अच्छा रहा। कार्यक्रम में देवांगन को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। विदाई समारोह में उप डाकपाल भैसमा पुलसते, लिपिक विश्वकर्मा तथा सभी शाखा डाकपाल, सहायक शाखा डाकपाल, मेल ओव्हर सियर विक्रम सिंह एवं जीडीएस उपस्थित रहे।

निर्वाचन ड्यूटी के दौरान नशाखोरी करने वाले उप अभियंता को चार्जशीट जारी

रायगढ़। स्थैतिक निगरानी दल में विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट के रूप में ड्यूटी के दौरान शराब सेवन करने वाले उप अभियंता को विभागीय जांच के संबंध में आरोप पत्र जारी किया गया है। चार्जशीट में 15 दिवस के भीतर आरोपों के संबंध में जवाब देने हेतु लेख किया गया है। केलो परियोजना निर्माण संभाग लाखा खरसिया के उप अभियंता हृदयानंद राम की ड्यूटी स्थैतिक निगरानी दल में विशेष कार्यपालक मजिस्ट्रेट के रूप में चेक पोस्ट नाका बैसपाली, थाना कोतरा रोड विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 18 खरसिया में लगाई गई थी, जिसमें 15 अप्रैल 2024 को ड्यूटी के दौरान शराब पीकर उपस्थित हुए थे। उप अभियंता हृदयानंद राम के शराब पीकर नशे की हालत पर ड्यूटी करने की शिकायत हुई थी। शिकायत के आधार पर सहायक रिटर्निंग ऑफिसर के निर्देश पर किरोड़ीमल शासकीय जिला चिकित्सालय रायगढ़ में थाना प्रभारी कोतरारोड रायगढ़ द्वारा मुलाहिजा कराया गया। डाक्टरी परीक्षण रिपोर्ट में शराब सेवन करने की पुष्टि की गई है।

SKF व्यावसायिक वाहन मैकेनिकों को इनोवेटिव कैंपेन के माध्यम से सशक्त बनाने की ओर अग्रसर

रायपुरः परिवहन समाधानों की एक अग्रणी प्रदाता, SKF इंडिया ने बड़े ही गर्व से एक व्यापक राष्ट्रव्यापी ट्रक एक्टिवेशन अभियान, इंस्टॉल कॉन्फिडेंस, इंस्टॉल SKF शुरू करने की घोषणा की है, जो विशेष रूप से व्याटवसायिक वाहनों के मैकेनिकों के लिए तैयार किया गया है। यह ट्रक24-25अप्रैल को बिलासपुर के मैकेनिक कम्युनिटी को जागरूक करेगा। उसके बाद ट्रक 26 और 27 को भिलाई और रायपुर में आगमन करेगा। इस पहल का पहला उद्देश्य है व्यावसायिक वाहनों (CV) के लिए SKF की पेश की गई सुविधाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना, जो परिवहन क्षेत्र में स्थिरता को मज़बूत बनाते हुए मैकेनिकों के जीवन को सुव्यवस्थित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका दर्शाते हैं।SKF ऑटोमोटिव इंडिया और दक्षिण पूर्व एशिया के निदेशक अलगेसन थसारी का कहना है: SKF में, हम उन उद्योगों के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं, जिस समाज का हम हिस्सा हैं, और जिस ग्रह पर हम सभी निवास करते हैं। स्व्यस्न ट्रक एक्टिवेशन अभियान निर्माताओं और मैकेनिकों के बीच की दूरी को मिटाने, सहयोग को बढ़ावा देने और परिवहन उद्योग को निरंतर सेवा देते हुए उनके भीतर सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है। इन पहलों के माध्यम से, हम न सिर्फ मैकेनिकों को सशक्त बनाना चाहते हैं, बल्कि एक-दूसरे पर निर्भर समाज की ओर अपनी सामूहिक यात्रा को भी आगे बढ़ाना चाहते हैं।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन पेश करने की घोषणा की लीड इन पावर ('शक्ति में नेतृत्व') के लिए एक सिग्नेचर स्टाइल

बैंगलोरः टोयोटा फॉर्च्यूनर किसी परिचय का मोहताज नहीं है और इस सबसे प्रशंसित एसयूवी की सफलता पर खुशी मनाने के लिए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने आज भारतीय बाजार में फॉर्च्यूनर का लीडर एडिशन पेश किया। अपनी जानी-मानी विशेषताओं के आधार पर, फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन कई ऐड-ऑन सुविधाओं के साथ विशिष्ट डिजाइन लाता है। टोयोटा फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन अपने भिन्न स्टाइल तत्वों और अपनी प्रभावशाली उपस्थिति के साथ अलग दिखता है। गतिशील फ्रंट और रियर बम्पर स्पॉइलर की विशेषता वाला यह वाहन साहस और परिष्कार की आभा प्रदर्शित करता है, जिससे नेतृत्व का वास्तविक सार दिखाई देता है। फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन की मुख्य विशेषताओं में से एक इसका प्रमुख डुअल-टोन एक्सटीरियर है, जो 'काले, सफेद और स्पष्टता' के पैलेट में उपलब्ध है। यह अनोखा संयोजन न केवल बाहरी आकर्षण को बढ़ाता है बल्कि इसकी प्रीमियम शिल्प कौशल को भी रेखांकित करता है। इंटीरियर में डुअल-टोन सीटें हैं जो बेजोड़ आराम और सुंदरता प्रदान करती हैं, जिससे ड्राइविंग अनुभव नई ऊंचाइयों पर पहुंच जाता है। आलीशान असबाब से लेकर एर्गोनोमिक डिज़ाइन तक, प्रत्येक विवरण को सावधानीपूर्वक तैयार करने के साथ, फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन हर यात्रा को अद्भुत अनुभव से भर देता है। इसकी परफेक्ट स्टाइलिंग के अलावा, फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन सुविधा, सुरक्षा और कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई उन्नत सुविधाओं की एक श्रृंखला से युक्त है। वायरलेस चार्जर और टीपीएमएस (टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम) से लेकर ऑटो-फोल्डिंग मिरर तक, इस वाहन का उद्देश्य महत्वाकांक्षी ग्राहकों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करना है। इसके अलावा, फॉर्च्यूनर लीडर एडिशन काले मिश्र धातु से बने पहियों के साथ आता है।

बिजली की अनवरत बढ़ रही मांग-नहीं लगे नए संयंत्र

कोरबा। घरेलू बिजली के साथ लगातार राज्य में औद्योगिक व कृषि क्षेत्र में बिजली की मांग बढ़ रही हैं। पिछले पांच साल के आंकड़ों पर नजर डालें तो औसतन प्रतिवर्ष 7.50 प्रतिशत बिजली की खपत में वृद्धि हो रही हैं। दूसरी ओर नए संयंत्र स्थापना में अभी देरी है। सर्वाधिक मांग मई माह में रहती है, पर इस बार अप्रैल माह में ही पीक अवर्स में अब तक 5,900 मेगावाट तक मांग पहुंच चुकी है। 6,200 मेगावाट तक बिजली की खपत पीक अवर्स में होने का अनुमान लगाया जा रहा हैं। छत्तीसगढ़ विद्युत कंपनी के पुरानी हो चुकी कोरबा पूर्व ताप विद्युत गृह (440 मेगावाट) संयंत्र को प्रदूषण अधिक होने पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के आदेश पर वर्ष 2020

में बंद करना पड़ा था। इसकी भरपाई कंपनी अब तक नहीं कर सकी है। हसदेव ताप विद्युत संयंत्र (एचटीपीपी) की 210-210 मेगावाट (कुल 840 मेगावाट) की चार इकाई के भरोसे कंपनी की नैय्या पार हो रही। एचटीपीपी में 660-660 मेगावाट की दो इकाई की स्थापना की जानी है। इसके लिए पर्यावरणीय जनसुनवाई भी हो चुकी है। कंपनी ने इस संयंत्र को वर्ष 2029 तक चालू करने का लक्ष्य रखा है, पर काम शुरू नहीं हो सका है। इसके अलावा प्रदेश में 7100 मेगावाट क्षमता के छह नए जल विद्युत संयंत्र लगाने की योजना तैयार की गई है, पर इसकी शुरुआत अभी तक नहीं हो सकी है। संभावना जताई जा रही है कि आचार संहिता खत्म होने के बाद एचटीपीपी व जल विद्युत संयंत्र स्थापना की प्रक्रिया आरंभ होगी।

15 जून तक स्कूलों में गर्मी छुट्टी घोषित

रायगढ़। वर्तमान में प्रदेश में पड रही भीषण गर्मी व लू के कारण छात्रों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव की आशंका को दृष्टिगत रखते हुये स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य शासन द्वारा शासकीय, अनुदान प्राप्त, गैर अनुदान प्राप्त, अशासकीय शालाओं हेतु घोषित ग्रीष्मकालीन अवकाश में आंशिक संशोधन करते हुये, दिनांक 22 अप्रैल 2024 से 15 जून 2024 तक ग्रीष्मकालीन अवकाश घोषित किया है। जारी आदेश शिक्षकों हेतु लागू नहीं होगा तथा विभागीय समसंख्यक आदेश की शेष कण्डिकाएं यथावत रहेंगी।

संगवारी केन्द्रों के मतदान दलों को मिला प्रशिक्षण, कलेक्टर ने सही जवाब देने वाले कर्मचारियों को दिए पुरस्कार

बिलासपुर। लोकसभा चुनाव के लिए संगवारी महिला मतदान केंद्र में ड्यूटी वाले महिला कर्मचारियों को चुनाव प्रशिक्षण दिया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अवनीश शरण ने मतदान की पूरी प्रक्रिया रोचक तरीके से समझाई। उन्होंने ईवीएम और वीवीपेट मशीन के बारे से सरलता से बताया और रोचक सवाल जवाब भी किए। कलेक्टर ने कहा कि हर कर्मचारी में कुछ कमियां कुछ खूबियां रहती हैं। हमें टीमवर्क के रूप में सबको साथ लेकर काम करना है। सब अपना बेस्ट एफर्ट दें, कहीं कोई समस्या नहीं है। उन्होंने कहा कि पीठासीन अधिकारी की पुस्तिका को अच्छे तरीके से पढ़ लें। चुनाव संबंधी हर चीज के बारे में स्पष्ट मार्गदर्शन दिया हुआ है। उन्होंने ईवीएम मशीन की कमिश्निंग की जानकारी देते हुए बताया कि मशीन की तैयारी कैसे की जाए। कलेक्टर ने मशीनों के संबंध में महिला अधिकारियों की शंकाओं

का समाधान भी किया। कलेक्टर ने महिला अधिकारियों से चुनाव से जुड़े महत्वपूर्ण टर्म जैसे ईवीएम, स्वीप, वीवीपेट का फुल फॉर्म क्या होता है, जैसे प्रश्न किए। सही जवाब देने वालों को कलेक्टर ने पुरस्कृत किया। उल्लेखनीय है की जिले में 96 आदर्श मतदान केंद्र बनाए गए हैं। जिनमें हर विधानसभा क्षेत्र में 10 केंद्र केवल महिला कर्मचारियों द्वारा संचालित होगा। इस प्रकार जिले की छह विधानसभा मिलाकर 60 संगवारी महिला मतदान केंद्र बनाए गए हैं। इस अवसर पर एसडीएम पीयूष तिवारी, तहसीलदार शशि भूषण सोनी, नायब तहसीलदार, नेहा विश्वकर्मा सहित मास्टर ट्रेनर्स उपस्थित थे।

डॉक्टर्स ने क्राउड फंडिंग के जरिए बनाई हॉरर-ड्रामा फिल्म दंतेला

जल संरक्षण पर आधारित फिल्म दंतेला 21 जून से सिनेमाघरों में

रायगढ़। जल संरक्षण पर आधारित बहुप्रतीक्षित छत्तीसगढ़ी फिल्म दंतेला 21 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। हॉरर-ड्रामा जॉनर की फिल्म दंतेला 5 अन्य भाषाओं हिंदी, ओडिया, भोजपुरी, तमिल और तेलुगु में बाद में रिलीज होगी। फिल्म के ट्रेलर रिलीज से पहले टीजर और गाने पूरे मध्य भारत में धमाल मचाए हुए है। फिल्म के गीत-संगीत ठेठ छत्तीसगढ़ी विधा में रचे गए हैं जो कि फिल्म का सबसे बड़ा आकर्षण है।कहानी सत्य घटना पर आधारित लोक कथा पर है जिसमें स्थानीय किवंदतियां पीढ़ी दर पीढ़ी कैसे अंधविश्वास का रूप ले लेती हैं इन्हीं की परतों को खोलते और सच्चाई सामने लाती है दंतेला। फिल्म के मूल में जल संरक्षण है जिसे लोगों को समझाने के लिए क्रिएटिव लिबर्टी फिल्म मेकर्स ने ली है और उम्दा सिनेमैटोग्राफी और कथानक से पेश की है।

पहली बार किसी छत्तीसगढ़ी फिल्म में इतनी डिटेलिंग की गई है, फिर चाहे वह सूखा का दृश्य दिखाना हो या फिर 1942 के प्लॉट को। इस कारण फिल्म समीक्षक दंतेला को अभी से छत्तीसगढ़ी सिनेमा में एक मील का पत्थर मान रहे हैं क्योंकि अपने बेजोड़ टीजर और गाने के अलावे यह पहली छत्तीसगढ़ी फिल्म है जो 6 भाषा में आएगी। अरिहान फिल्म्स के बैनर तले बनी फिल्म दंतेला के लेखक व निर्देशक डॉ. शांतनु पाटनवार (शानू) हैं। शानू का जन्म रायगढ़ में हुआ है और प्राथमिक शिक्षा भी कार्मेल स्कूल में हुई है। इनके पिता सिद्धेश्वर पाटनवार सिंचाई विभाग में इंजीनियर थे। शांतनु को बेस्ट डेब्यू डायरेक्टर और बेस्ट डायलॉग राइटर का छत्तीसगढ़ी फिल्म अवार्ड मिला है। शानू ने 2021 में आई छत्तीसगढ़ी फिल्म कुरुक्षेत्र का निर्देशन किया था। केजीएफ 2 के शूटिंग को देखने के लिए उन्हें विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया था। दंतेला की कहानी बलरामपुर के चरचरी गांव की है जहां फिल्म के कुछ हिस्से फिल्माए गए हैं बाकी फिल्म का ज्यादातर हिस्सा रायपुर के समीप खमतराई में शूट किया गया है। वहां चरचरी गांव को रिक्रिएट किया गया और सालभर की शूटिंग में दंतेला बनी। डॉक्टर्स की टीम ने क्राउड फंडिंग और अपनी बचत लगाकर फिल्म का निर्माण किया है। संभवतः यह देश की पहली फिल्म होगी जिसमें प्रोफेशनल डॉक्टर्स कैमरा थामे, संगीत देते, एक्टिंग करते व प्रोड्यूस करते नजर आ रहे हैं। फिल्म की पूरी टीम में छत्तीसगढ़िया लोग ही हैं सिर्फलीड एक्ट्रेस राया डिंगोरिया मुंबई से हैं। इनके अलावा एक्टर विशाल, डॉ. राज दीवान, ज्योत्सना, वीना सेंद्रे, अनिल सिन्हा, अमन सागर प्रमुख भूमिका में हैं। अंकित काठले व रवि पटेल के संगीत ने फिल्म में स्थानीयता भरी है। ऋषभ सिंह ठाकुर ने फिल्म के कुछ गाने लिखे व कंपोज किए हैं। प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ी गायक संतोष यादव ने अपनी दमदार आवाज दी है। डॉ. शांतनु ने भी फिल्म के गाने लिखे हैं। फिल्म के लेखक-डायरेक्टर डॉ. शांतनु पाटनवार कहते हैं कि दंतेला छत्तीसगढ़ी संस्कृति को समेटे हुए संपूर्ण फिल्म है। फिल्म के गीत और संगीत पारंपरिक हैं जिससे दर्शक चाहे सरगुजा का हो या जगदलपुर वह इनसे अपने आप को जरूर कनेक्ट करेगा। छत्तीसगढ़ी पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग जो हम अपने आसपास देखते हैं उसे बड़े पर्दे पर बजते और सुनते देखना सुखद अनुभव होगा। बिरहा, ददरिया के साथ रेट्रो, आइटम नंबर फिल्म में है जिसे सिचुएशन के अनुसार उपयोग किया गया है। हमने टाइप्ट सिनेमा मेकिंग नहीं की है। जो चीज वास्तव में जैसी दिखती है उसे वैसा ही पेश किया है। हमारे इसी प्रयोग को लोग कन्नड़ सिनेमैटोग्राफी से तुलना कर रहे हैं क्योंकि वहां भी ओरिजनल्स पर ही फोकस किया जाता है। हमने एक किंवदंती (लोक कथा) के मूल में जाकर उसे सामने लाया है। फिल्म के हर भाग पर सभी ने खूब मेहनत की है। टीजर और गाने को लोगों का खूब प्यार मिल रहा है। डॉक्टरी पेशे के साथ हम आने वाले दिनों में और फिल्में लाएंगें फिलहाल दंतेला के रिलीज पर हमारी निगाहें टिकी हैं।

शूटिंग रही चुनौतीपूर्ण-दंतेला की अधिकतर शूटिंग खमतराई में हुई। जहां बीते साल पारा 46 डिग्री पर कुछ दिन तक ठहर गया था। फिल्म में ठेठ ग्रामीण परिवेश को दिखाना था जहां के लोगों के पैर में चप्पल नहीं होते। नंगे पैर शूटिंग में सभी कलाकारों के पैरों में छाले पड़ गए। वहां पंखा भी काम नहीं कर रहा था। डिहाइड्रेशन का शिकार तो लगभग सभी हुए। फिर इसके बाद बारिश हुई तो हरियाली में सूखे के शॉट लेने में शूटिंग में देरी हुई और बजट भी बढ़ता गया। क्राउड फंडिंग से बन रही फिल्म में बजट की दिक्कत भी आई लेकिन टीम सभी पेरशानियों से धीरे-धीरे बाहर निकली। शूटिंग के बाद पोस्ट प्रोडक्शन पर काफी काम हुआ, जिसके कारण फिल्म की डिटेलिंग बेहतर हुई है।

काली आवत हे लोगों की जुबां पर छाया-वरात्रि में दंतेला का पहला गाना काली हावत हे को जारी किया गया। जारी होने के 3 दिन में ही 30 लाख से अधिक लोगों ने इसे देखा। प्रदेश के हर लोगों के मुंह पर यह गाना छा गया है। दूसरे राज्यों में भी इस गाने को टीजर के साथ काफी सराहना मिल रही है। इंस्टाग्राम पर इसके काफी रील वायरल हो रहे हैं। कई मंदिरों में यह गाना बज रहा है और रामनवमी की शोभायात्रा में भी काली आवत हे गाना ध्वनि विस्तारक यंत्रों व म्यूजिक टावर में खूब चला। गाना स्थानीय भाषा में होने के साथ स्थानीय संस्कृति के रस में डूबा हुआ है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर बुधवार 24 अप्रैल 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

सियासत में सर्वेक्षणों पर कितना भरोसा

न्यायपालिका गरिमा को अक्षुण्ण रखने का आह्वान

अब की बार पूर्व न्यायाधीशों ने 'न्यायपालिका को अनावश्यक दबाव से बचाने के लिए' देश के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ को एक पत्र लिखा है। सुप्रीम कोर्ट के चार और हाई कोर्ट के 17 पूर्व न्यायाधीशों ने किसी का नामोल्लेख किए बिना आरोप लगाया है कि कुछ लोग यानी वकील 'अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों एवं व्यक्तिगत लाभों से प्रेरित होकर न्यायिक संस्था को कमजोर करने में लगे हैं'। जस्टिस चंद्रचूड़ से ऐसे तत्वों के झांसे में न आकर न्यायिक गरिमा को अक्षुण्ण रखने का आह्वान किया गया है। इसी तरह की भाषा-शैली में आज से तीन हफ्ते पहले सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालयों के 600 अधिवक्ताओं, जिनमें हरीश साल्वे जैसे दिग्गज शामिल थे, ने जस्टिस चंद्रचूड़ को एक पत्र लिखा था। इसमें भी न्यायपालिका के सामने आ रही वैसी ही कठिनाइयों का जिक्र किया गया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसकी जड़ कांग्रेस की 'प्रतिबद्ध न्यायपालिका बनाने की मानसिकता' में बताया था तो उजागर हुआ था कि पत्र का ताल्लुक कांग्रेसी विचारधारा के अधिवक्ताओं से है, जो पीठ या न्यायाधीशों पर मनमाफिक फैसले के लिए 'अनुचित दबाव और प्रभाव' डालते हैं। पत्र पर दस्तखत करने वाले जस्टिस ढींगरा ने एक इंटरव्यू में कपिल सिब्बल का नाम लेते हुए कहा है कि वे मामले में 'पैरवी के दौरान केस की मेरिट पर दलीलें न देकर कहने लगते हैं कि अगर इसे छोड़ा नहीं गया तो बवाल हो जाएगा' आदि। इसी समूह में प्रशांत भूषण और अभिषेक मनु सिंघवी के भी नाम हैं। और भी नाम हो सकते हैं। ये लोग पहले इजलास के अंदर और इसके बाहर इंटरव्यू एवं लेखों के जरिए उन फैसले को सरकार के दबाव में दिया बता कर उनकी अतार्किक आलोचनाएं करते हैं, जो उनके विरोध में आए होते हैं। इससे न्यायपालिका पर खामख्वाह दबाव बनता है। एक बार जस्टिस चेलमेर ने भी 'इन करोड़ी समूह के अधिवक्ताओं से दिक्कत' बताई थी। न्यायिक क्षेत्र-निचली से लेकर सर्वोच्च अदालत तक-में हाल के दशकों में यह एक फेनोमिना के रूप में विकसित हुआ है। इसमें मनचाही खंडपीठ के लिए तो पीठ बदलने के लिए जोर-जबर्दस्ती की जाती है। इस समस्या का समूचा हिस्सा न्यायालीय ही नहीं है।

संजय कुमार

चुनावी मौसम में सर्वेक्षणों की बहार आ जाती है और यह सवाल पैदा हो जाता है कि चुनावी सर्वे पर लोगों को कितना भरोसा करना चाहिए? यहां सवाल यह भी है कि भरोसा आप किसे कहते हैं? अगर आप इन चुनावी सर्वेक्षणों से यह अनुमान लगाना चाहते हैं कि 4 जून को जब वोटों की गिनती होगी, तब कौन-सी पार्टी जीतेगी और कौन-सी पार्टी नंबर दो या तीन रहेगी, तो आप गलत हैं। वास्तव में, ऐसे सर्वे मौसम के पूर्वानुमान की तरह ही हैं। अनुमान अतीत और वर्तमान की स्थितियों को देखते हुए लगाया जाता है, जरूरी नहीं कि मौसम का पूर्वानुमान हमेशा सही साबित हो, ठीक इसी तरह से जरूरी नहीं कि चुनावी सर्वेक्षण द्वारा लगाया गया अनुमान भी हर बार सही साबित हो। अत: सर्वे को पढ़ने-जानने का सही तरीका समझना चाहिए। कोई भी सर्वेक्षण अपनी सीमा में एक अनुमान भर लगा सकता है, उसका सौ फीसदी सही होना जरूरी नहीं है। यही मानना चाहिए कि जिस वक्त सर्वे किया गया, उस वक्त लोगों की प्राथमिकताएं क्या थीं और जरूरत के हिसाब से प्राथमिकताएं बदलती रहती हैं। पहले के चुनावी सर्वे कुछ ज्यादा सटीक होते थे, क्योंकि पहले सर्वे करने वाले कम लोग होते थे और वे सर्वे की तकनीक-तरीकों पर ज्यादा ध्यान देते थे। जैसे-जैसे सर्वेक्षणों की मांग बढ़ने लगी, वैसे-वैसे बहुत सारे लोग सर्वेक्षण के क्षेत्र में आ गए। बहुत से सर्वेक्षणकर्ता यह भी नहीं जानते कि सर्वे कहते किसको हैं? सैंपलिंग कैसे की जाती है, प्रश्नपत्र कैसे बनाया जाए, साक्षात्कार कैसे लें, आंकड़े कैसे एकत्र करें, तो अब बहुत शॉर्टकट आ गए हैं। तमाम तरह के ऐसे लोग भी आ गए हैं, जो सर्वे की सही विधि नहीं जानते और न उसे समझने की कोशिश करते हैं। इसी वजह से आजकल ढेर सारे सर्वे प्रकाशित होते हैं और उनमें से बहुत से बहुत हल्के होते हैं। यहां मैं वाहन चालन का उदाहरण दे सकता हूं। 30 साल पहले दिल्ली में गाड़ी चलाने वालों की संख्या कम थी। गाड़ी वही

लोग चलाते थे, जो विधिवत इसका प्रशिक्षण लेकर आते थे। लोग मानते थे कि जब तक मैं सही ढंग से चलाना सीख न लूं, गाड़ी लेकर सड़क पर नहीं उतर सकता। जब टैक्सी की मांग बढ़ी, चालकों की मांग बढ़ी, तब ऐसे लोग भी वाहन चलाने उतर आए, जो ठीक से प्रशिक्षित नहीं हैं। जब दुनिया में अप्रशिक्षित लोग बड़ी संख्या में आ जाते हैं, तब सर्वेक्षण हो या सड़क, दुर्घटना की गुंजाइश बढ़ जाती है। इधर कुछ सर्वे में तो जोड़-घटाव के स्तर पर भी त्रुटि देखी गई है, स्थिति हास्यास्पद बनी है और सबसे बड़ी बात कि इससे सर्वेक्षण की विश्वसनीयता प्रभावित हुई है। जब आप सर्वेक्षण की तकनीक से वाकिफ ही नहीं हैं, तो ऐसी गलतियों को आप रोक नहीं सकते। हां, सर्वे को 'मैनेज' किया जा सकता है। मतलब, आंकड़ों में उलट-फेर किया जा सकता है। अपने देश में अक्सर हम चर्चा करते रहे हैं कि कॉलेज न भी जाएं, तब भी मनचाही डिग्री मिल जाती है। आप कॉलेज में हाजिरी न भी लगाएं, तो आपकी उपस्थिति को 'मैनेज' किया जा सकता है। आंकड़ों या सर्वेक्षण में भी किसी राजनीतिक पार्टी के पक्ष या विरोध में हेरफेर संभव है। इन्हीं वजहों से लोगों की सर्वेक्षण पर आस्था कम हुई है। यह सच है कि लोग सर्वेक्षणों को देखना-पढ़ना चाहते हैं, पर उन्हें पूरा भरोसा नहीं होता है। हम अभी भूले नहीं हैं कि साल 2004 के लोकसभा चुनाव परिणाम से पहले हुए सर्वेक्षणों का मजाक उड़ाया गया था। चुनाव पूर्व सर्वे ही नहीं, एग्जिट पोल तक गलत निकले थे। 'शाइनिंग इंडिया' का खूब हल्ला था, तय लग रहा था कि भाजपा के नेतृत्व में गठबंधन वापसी कर लेगा, पर कांग्रेस के नेतृत्व में सरकार बनी। सर्वेक्षण करने वालों को तगड़ा झटका लगा था। लोग पूछने लगे थे कि सर्वे कैसे किया गया? वैसे, केवल भारत ही नहीं, दूसरे देशों में भी सर्वेक्षण हमेशा सही नहीं होते हैं। हां, जिन देशों में दो दलीय व्यवस्था या कम सियासी पार्टियां हैं, वहां सर्वेक्षण अपेक्षाकृत आसान हैं और उनका आकलन भी सटीक निकलता है। अमेरिका की बात करें, तो वहां राष्ट्रपति चुनाव के समय ज्यादातर सर्वे होते हैं, उसमें ज्यादातर दो ही उम्मीदवारों के बीच मुकाबला होता है, तो वहां सर्वेक्षण के सटीक होने की गुंजाइश ज्यादा होती है। अपने देश में देखिए, राज्यों में अलग-अलग पार्टियां हैं, उनके बीच गठबंधन होता है और गठबंधन भी स्थिर नहीं रहता है। अपने देश में वर्गीकरण बहुत हैं, अगर किसी क्षेत्र में एक ही तरह के लोग ज्यादा हों, तो आकलन आसान हो जाता है, पर भारत में आबादी बहुत मिली-जुली है, स्थानीय लोग भी हैं और बाहरी लोगों में भी बहुत विविधता है, तो कोई अनुमान लगाना आसान नहीं है। अपेक्षाकृत कम विविधता वाले अमेरिका में भी सर्वेक्षण पूरी तरह से नाकाम हुए हैं। कोई भी ऐसा देश नहीं, जहां सारे सर्वे सफल रहे हों। क्या सर्वेक्षणों की गुणवत्ता के लिए प्रयास किए जा सकते हैं? मैं इस बात का पक्षधर नहीं हूं कि हार-जीत वाले सारे सर्वेक्षणों पर प्रतिबंध लगा दिया जाए, पर पारदर्शिता का प्रदर्शन अनिवार्य होना चाहिए। जब भी कोई आंकड़ा आप साझा करें, तो उसके बार में आपको विस्तार से स्रोत बताने चाहिए, आपने किस मकसद से सर्वे किया, उसके लिए आपके पास पैसा कहां से आया? सर्वेक्षण के लिए आप किन लोगों के बीच गए? सर्वेक्षण करने वालों को जवाब देने की स्थिति में होना चाहिए, केवल आंकड़े पेश कर देने से काम पूरा नहीं हो जाता। लोगों को सर्वेक्षणों पर जरूर सवाल खड़े करने चाहिए, ताकि सर्वे में गंभीरता आए। सर्वेक्षण के नतीजे गलत हो जा रहे हैं, इसका मतलब कतई यह नहीं कि उन पर रोक लगा दी जाए। सर्वे की पारदर्शिता के लिए कानूनी प्रबंध भी किया जा सकता है। प्रेस की आजादी के तहत भी दिशा-निर्देश लाए जा सकते हैं। जैसे आदर्श चुनाव संहिता प्रत्याशियों के लिए होती है, उसी तरह से एक संहिता चुनावी सर्वेक्षणों के लिए हो सकती है। चुनाव आयोग के पास ताकत है, वह चाहे, तो दिशा-निर्देश जारी कर सकता है। सर्वेक्षणकर्ताओं को बताया जा सकता है कि सही या ईमानदार सर्वेक्षण कैसे किया जाए? कानून भले न बने, पर सर्वेक्षण के लिए दिशा-निर्देश स्पष्ट करने की जरूरत है, ताकि किसी सर्वेक्षण पर सवाल न उठे और उनके नतीजों से लोगों को सोचने का हुनर मिले। ड्राइविंग लाइसेंस के बिना वाहन चलाने पर दंडित होना पड़ता है। वैसे ही विधि का पालन किए बगैर सर्वेक्षण की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए।

विशेष लेख

आकर्षण समाज के हर वर्ग में हैं

अवधेश कुमार

इस समय लोक सभा चुनाव को लेकर कई तरह के मत हमारे सामने आ रहे हैं। सबसे प्रबल मत यह है कि भाजपा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपने सहयोगी दलों के साथ तीसरी बार भारी बहुमत से सरकार में लौट रही है। कुछ लोग प्रधानमंत्री के 370 भाजपा के और सहयोगी दलों के साथ 400 सीटें मिलने तक की भी भविष्यवाणी करने लगे हैं। दूसरी ओर, विपक्ष इसे खारिज करते हुए कहता है कि भाजपा चुनाव हार रही है और वह 200 सीटों से नीचे चली पाएगी। विपक्ष भाजपा की आलोचना करती है, नरेन्द्र मोदी पर सीधे प्रहार भी करती है, पर अपने समर्थकों और भाजपा विरोधियों के अंदर भी विश्वास नहीं दिला पाती कि वाकई वह भाजपा से सत्ता छीनने की स्थिति में चुनाव लड़ रहे हैं। आईएनडीआईए गठबंधन (इंडिया) की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस से नेताओं के छोड़कर जाने का कायम सिलसिला इस बात का प्रमाण है कि पार्टी के अंदर कैसी निराशा और हताशा है। तो फिर इस चुनाव का सच क्या हो सकता है? आखिर 4 जून का परिणाम क्या तस्वीर पेश कर सकता है? इस चुनाव की एक विडंबना और है। भाजपा के नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों का एक वर्ग स्वयं निराशाजनक बातें करता है। व्यक्तिगत स्तर पर मेरी ऐसे अनेक लोगों से बातें होती हैं, जो चुनाव में जमीन पर हैं या वहां होकर लौट रहे हैं। इनमें ऐसे लोगों की संख्या बड़ी है जिनमें उत्साह या आशावाद का भाव न के बराबर मिलता है। वे बताते हैं कि जैसी दिल्ली में या बाहर हवा दिखती है धरातल पर वैसी स्थिति नहीं है। जब उनसे प्रश्न करिए कि धरातल की स्थिति क्या है तो सबके उत्तर में कुछ सामान बातें समाहित होती हैं, गलत उम्मीदवार के कारण लोगों के अंदर गुस्सा या निराशा है, गठबंधन को सीट देने के कारण अपने लोगों के अंदर निराशा है, गठबंधन ने ऐसे उम्मीदवार खड़े किए हैं जिनका बचाव करना या जिनके लिए काम करना भाजपा के कार्यकर्ताओं के लिए कठिन हो गया है आदि। कुछ लोग अनेक क्षेत्रों में जातीय समीकरण की समस्या का उल्लेख भी करते हैं। एक समूह यह कहता है कि आम कार्यकर्ताओं और नेताओं की सरकार में उपेक्षा हुई है, उनके काम नहीं हुए हैं, उनको महत्त्व नहीं मिला है और अब लोगों का धैर्य चूक रहा है। यहां तक कि जिस तरह के लोगों को पुरस्कार, पद, प्रतिष्ठा या टिकट दिया गया है उनसे भी लोग असहमति व्यक्त करते हैं। भाजपा कार्यकर्ताओं समर्थकों के साथ विपक्ष की बातों को मिला दिया जाए तो निष्कर्ष यही आएगा कि भले भाजपा 400 पार का नारा दे, लेकिन यह हवा हवाई ही है। किंतु क्या यही 2024 लोक सभा चुनाव की वास्तविक स्थिति है? यह बात सही है कि अनेक राज्यों, जिनमें उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि को शामिल किया जा सकता है वहां पार्टी के अंदर कई जगह उम्मीदवारों को लेकर विरोध है। कुछ उपयुक्त लोगों को टिकट न मिलना तथा ऐसे सांसदों को फिर से उतारना जिनको लेकर कार्यकर्ता नाराजगी प्रकट करते रहे हैं विरोध का एक बड़ा कारण है। साथी दलों ने भी भाजपा के लिए समस्याएं पैदा की है। उदाहरण के लिए बिहार में लोजपा ने ऐसे उम्मीदवार उतारे जो परिवारवाद का साक्षात प्रमाण है और भाजपा के लोगों के लिए इनका बचाव करना कठिन है। कुछ साथी दलों ने प्रभाविता और साक्षमता की जगह व्यक्तिगत संबंध और परिवार को टिकट देने में प्रमुखता दिया। बिहार के जमुई में प्रधानमंत्री मोदी स्वयं प्रचार के लिए गए और वहां भाजपा के लोगों ने पूरी ताकत लगाई। इसका असर भी हुआ। बावजूद यह प्रश्न किया जा रहा है कि किसी नेता के बहनोई या 26 साल की एक लड़की को, जिसके पिता साथी दल में नेता हैं उनको हम अपना नेता या प्रतिनिधि मानकर कैसे काम करें? स्वर्गीय रामविलास पासवान की राजनीति परिवार के इर्द-गिर्द सिमटी रही। जद (यू) की ओर से भी ऐसे कई उम्मीदवार हैं, जिन्हें भाजपा और राजग के परंपरागत कार्यकर्ता और समर्थक स्वीकार नहीं कर रहे। भाजपा के भी कुछ ऐसे उम्मीदवार हैं, जिनके बारे में नेता कार्यकर्ता कह रहे हैं कि हम पर उन्हें थोप दिया गया है।

सीखते,तो अभी तक सब सज्जन हो जाते

विभूति मिश्र

सभापति महोदय, मैं माननीय मंत्री जी की तारीफ करता हूं कि ईमानदारी के साथ उन्होंने मार्किंग सिस्टम को जारी किया है, पर उन्होंने खुद ही अपने भाषण में इस बात को कबूल किया है कि जो दूरदराज के इलाके हैं, जो पिछड़े इलाके हैं, वहां इस व्यवस्था को लागू नहीं किया जाना चाहिए। ... शहरों में वह इस व्यवस्था को लागू करने के हक में हैं, किंतु पिछड़े इलाकों में लागू करने के पक्ष में नहीं हैं और उनके लिए उन्होंने कहा कि सिंबल सिस्टम ही जारी रखा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा है कि मतदाता बुद्धिमान हों। मैं कहना चाहता हूं कि यह संसद ही अगर इस बात की जांच नहीं कर सकती कि मतदाता बुद्धिमान हैं या नहीं, तो और कौन कर सकता है? ...यह कहा गया है कि मतगणना में गड़बड़ी होती है। मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि इसमें कभी गड़बड़ी नहीं होती है। एक प्रत्याशी के पहले सारे मत गिन लिए जाते हैं और उसके बाद पेटी में बंद हो जाते हैं और उसके बाद ही दूसरे प्रत्याशी के मतों की गिनती होती है। मेरी इस बात का मंत्री जी ने जवाब नहीं दिया है कि 42 करोड़ बैलेट पेपर और 15 दिन के अंदर हिन्दुस्तान में सुरक्षा के साथ छपवाए जा सकते हैं या नहीं छपवाए जा सकते हैं। ...मैंने अमेरिका का उदाहरण दिया था। वहां मार्किंग सिस्टम है और वहां पर इस काम में मशीन को इस्तेमाल में लाया जाता है, पर वहां भी गलती हुई है।... मैं नहीं कहता कि मार्किंग सिस्टम फेल होगा, पर फेल अगर होता है, तभी तो सुधार की बात कही जाती है। ...सुधार की बात सिंबल सिस्टम में भी और मार्किंग सिस्टम में भी, दोनों में लागू होती है। इस वास्ते क्यों न पुराने सिस्टम को सुधार करके चालू रखा जाए? ...गांव में आज दिन भी बड़े-बड़े लोग रहते हैं और उनके सामने जाकर गरीब आदमी को वोट देना होगा और वह बड़ा आदमी उसको डरा-धमकाकर जिसको चाहेगा, वोट दिलवा देगा और उसको कह देगा कि फलां बक्से में वोट डालो। उस गरीब आदमी को दिखलाना पड़ेगा कि वह उसको वोट दे रहा है या उसके कहने के मुताबिक वोट दे रहा है। ...गोपनीयता नहीं रह पाएगी । आप कहते हैं कि मार्किंग सिस्टम में मतदाता को शिक्षित किया जाए और उसको कहा जाए कि वह अपना मत न बेचे। ...आप यह भी कहते हैं कि प्रत्याशी उनको बुद्धिमानी से शिक्षित करें। मैं पूछना चाहता हूं कि इस सदन में कितने माननीय सदस्य ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी जिंदगी का कुछ हिस्सा जनसेवा में लगाया है?... जहां तक इल्जाम लगाने का ताल्लुक है, वह कोई भी लगा सकता है। चाहे यहां धर्मराज भी आकर बैठ जाएं, तो उनके खिलाफ भी इल्जाम लगाए जाएंगे। ...हमारे यहां के चुनाव की आज दुनिया भर में साख है। पहले हमारे (सुकुमार) सेन साहब चुनाव आयुक्त थे..., उन्होंने ईमानदारी के साथ चुनाव करवाया...। यहां कुछ लोगों का दिल्ली, कलकत्ता, बंबई आदि बड़े शहरों में रहने के कारण गांवों से संपर्क छूट गया है। ...केरल में जो उप-चुनाव हुआ, उसे कराने के लिए सारे हिन्दुस्तान की हर पार्टी के लोग गए थे और एक-एक वोटर को चार-चार आदमी सिखाने के लिए थे, तो केरल का चुनाव कोई उदाहरण नहीं है।मैं नहीं कहता कि मार्किंग सिस्टम फेल होगा, तभी तो सुधार की बात कही जाती है। ...सुधार की बात सिंबल सिस्टम में भी और मार्किंग सिस्टम में भी, दोनों में लागू होती है। इस वास्ते क्यों न पुराने सिस्टम को सुधार करके चालू रखा जाए? ...गांव में आज दिन भी बड़े-बड़े लोग रहते हैं और उनके सामने जाकर गरीब आदमी को वोट देना होगा और वह बड़ा आदमी उसको डरा-धमकाकर जिसको चाहेगा, वोट दिलवा देगा और उसको कह देगा कि फलां बक्से में वोट डालो। उस गरीब आदमी को दिखलाना पड़ेगा कि वह उसको वोट दे रहा है या उसके कहने के मुताबिक वोट दे रहा है। ...गोपनीयता नहीं रह पाएगी । आप कहते हैं कि मार्किंग सिस्टम में मतदाता को शिक्षित किया जाए और उसको कहा जाए कि वह अपना मत न बेचे। ...जब आम चुनाव होंगे, तब सारे हिन्दुस्तान में एक साथ होंगे। उस समय हर एक अपने-अपने चुनाव क्षेत्र में काम करेगा। जब अपनी दाढ़ी में आग लगेगी, तो कौन किसी और को देखेगा और दिखाएगा। यह कहना तो एक तकनीकी बात है कि लोगों को सिखाया जा सकता है। अगर ऐसा होता, तो आज सारे लोग सज्जन हो गए होते और धर्मात्मा हो गए होते। राजा रामचंद्र के राज में और युधिष्ठर के राज में भी यही कहा जाता था, पर लोग शिक्षित नहीं हो पाए। असलियत देखते हुए मैं कहता हूं कि सेन साहब या चुनाव आयुक्त हमारे साथ हिन्दुस्तान के देहात का पैदल दौरा करें, तब उन्हें सही स्थिति का ज्ञान हो सकेगा। उस गरीब आदमी को दिखलाना पड़ेगा कि वह उसको वोट दे रहा है या उसके कहने के मुताबिक वोट दे रहा है। ...गोपनीयता नहीं रह पाएगी । आप कहते हैं कि मार्किंग सिस्टम में मतदाता को शिक्षित किया जाए और उसको कहा जाए कि वह अपना मत न बेचे। ...आप यह भी कहते हैं कि प्रत्याशी उनको बुद्धिमानी से शिक्षित करें। मैं पूछना चाहता हूं कि इस सदन में कितने माननीय सदस्य ऐसे हैं, जिन्होंने अपनी जिंदगी का कुछ हिस्सा जनसेवा में लगाया है?... जहां तक इल्जाम लगाने का ताल्लुक है, वह कोई भी लगा सकता है। चाहे यहां धर्मराज भी आकर बैठ जाएं, तो उनके खिलाफ भी इल्जाम लगाए जाएंगे। ...हमारे यहां के चुनाव की आज दुनिया भर में साख है। पहले हमारे (सुकुमार) सेन साहब चुनाव आयुक्त थे..., उन्होंने ईमानदारी के साथ चुनाव करवाया...। यहां कुछ लोगों का दिल्ली, कलकत्ता, बंबई आदि बड़े शहरों में रहने के कारण गांवों से संपर्क छूट गया है। ...केरल में जो उप-चुनाव हुआ, उसे कराने के लिए सारे हिन्दुस्तान की हर पार्टी के लोग गए थे और एक-एक वोटर को चार-चार आदमी सिखाने के लिए थे, तो केरल का चुनाव कोई उदाहरण नहीं है।मैं नहीं कहता कि मार्किंग सिस्टम फेल होगा।

लोगों को सिखाएं कि अपना वोट नहीं बेचें

ए के सेन

सभा को याद होगा कि निशान लगाकर मतदान की प्रणाली 1952 के सामान्य निर्वाचन के पहले प्रचलित थी। वास्तव में सन् 1945 के सामान्य निर्वाचन निशान लगाकर मतदान करने की प्रणाली के अंतर्गत ही हुए थे।... यह ठीक है कि इधर-उधर कुछ गलतियां भी हुईं। जब 20 करोड़ व्यक्ति मत देने आएंगे, तो कुछ गलतियां अवश्य ही होंगी, परंतु देश के आकार और मतदाताओं की संख्या को देखते हुए हमने चुनाव आयुक्त की सिफारिश पर जो चुनाव व्यवस्था निर्धारित की है, वह सर्वथा सफल सिद्ध हुई है...। निशान लगाकर मतदान के विरुद्ध केवल एक तर्क पेश किया गया है और वह यह कि जब संसद केमाननीय सदस्य भी बटन ठीक से नहीं दबा सकते, तो अशिक्षित मतदाता मतपत्र पर सही निशान कैसे लगा सकते हैं? ...हमें स्वीकार करना चाहिए कि उसमें शिक्षा का विशेष महत्व नहीं है, क्योंकि शिक्षित होने के बावजूद लोग गलतियां कर सकते हैं।... पहले हम गांवों की बात करेंगे, क्योंकि अभी भी हमारे अधिकांश देशवासी गांवों में ही रहते हैं। अभी जो प्रणाली प्रचलित है तथा जो 1952 और 1957 में भी अपनाई गई थी, वह यह हैकि एक कमरे में उतनी मतपेटियां रखी जाती हैं, जितने उम्मीदवार होते हैं और प्रत्येक पेटी पर एक उम्मीदवार का चुनाव-चिह्न अंकित होता है। यदि दस उम्मीदवार होंगे, तो दस पेटियां होंगी। ...अब उसे अनेक मतपेटियां न देखकर एक कागज पर बने चुनाव चिह्नों में से एक चिह्न चुनना होता है। ...मैं ऐसे अनेक मामले जानता हूं, जिनमें मतपेटियां इस प्रकार रख दी जाती हैं कि आदमी अपनी पसंद की पेटी नहीं तलाश कर पाता और मतपत्र को वहीं कहीं डाल देता है अथवा अपने साथ ही लेकर चला जाता है। मैं समझता हूं, जब एक व्यक्ति अनेक पेटियों में से चिह्न

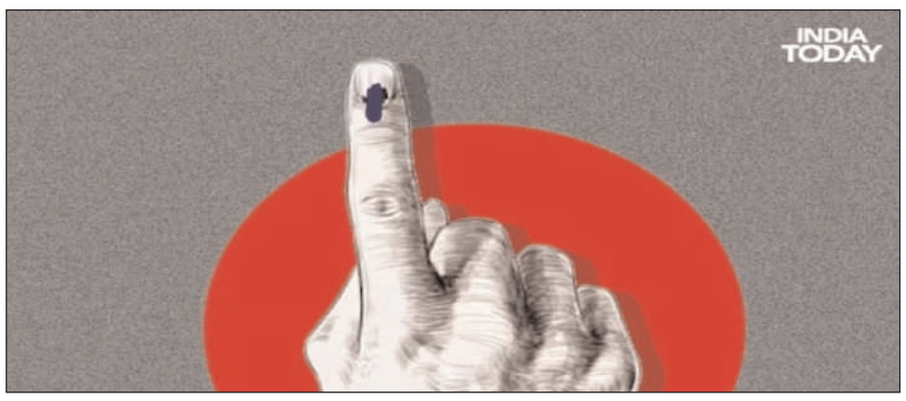

देखकर अपनी पसंद की पेटी तलाश कर सकता है, तो कोई कारण नहीं कि वह मतपत्र पर भी वह चिह्न न तलाश कर सके, जिस पर वह निशान लगाना चाहता है। ...वास्तव में मेरा तो विचार यह है कि जो प्रणाली हम अब अपनाने जा रहे हैं, वह पहले वाली प्रणाली से अधिक सरल है।... मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि हमारे मतदाता इतने जाहिल हैं। बात वास्तव में यह है कि हम उन्हें भली प्रकार समझाते नहीं हैं। शिक्षा का इससे कोई संबंध नहीं है। ...जिन बुराइयों के निराकरण के लिए यह प्रणाली निकाली गई थी, वे अनेक हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि गरीब मतदाता मतपत्रों को बाहर ले जाकर बेच देते थे। प्रजातंत्र के लिए इससे अधिक खतरनाक चीज कोई नहीं है। वर्तमान प्रणाली में मतदाता मतपत्र को बाहर नहीं ले जा सकेगा, क्योंकि मतपत्र निर्वाचन अधिकारी की उपस्थिति में पेटी में डाला जाएगा। ...एक अन्य बात यह है कि बहुत से लोग मतपत्र लेकर उसे कहीं भी रखकर और नमस्कार करके चले जाते हैं। ...अब संसदीय सीट की मतगणना को ले लीजिए। बहुत से गणक मेज पर बैठते हैं और मतपेटियां फैला दी जाती हैं। प्रत्येक पेटी से मतपत्र निकालकर गिने जाते हैं। उस समय उनको एक-दूसरे में आसानी से मिलाया जा सकता है। एक बार उनके मिल जाने पर यह पता नहीं लगाया जा सकता कि कौन सा मतपत्र किसके लिए था। वर्तमान प्रणाली में यह दोष भी दूर हो जाएगा। निशान लगाकर मतदान की नई प्रणाली को तुरंत क्रियान्वित करना संभव नहीं होगा। हम यह चुनाव आयुक्त पर छोड़ देंगे कि वह जिन क्षेत्रों को ठीक समझें, उनको नई प्रणाली लागू करने से छूट दे सकें। हम स्वयं निर्धारण नहीं करेंगे। ...आयुक्त के लिए नई प्रणाली को तुरंत लागू करना कठिन होगा। हमें याद रखना चाहिए कि आगामी वर्षों में हमारे देश में साक्षरता भी बहुत बढ़ जाएगी। अनुमान है, 1961 की जनगणना में 40 प्रतिशत साक्षरता हो जाएगी। इसलिए हमें ऐसी प्रणाली को यथाशीघ्र लागू करने का प्रयत्न करना चाहिए। निशान लगाकर मतदान के विरुद्ध केवल एक तर्क पेश किया गया है और वह यह कि जब संसद केमाननीय सदस्य भी बटन ठीक से नहीं दबा सकते, तो अशिक्षित मतदाता मतपत्र पर सही निशान कैसे लगा सकते हैं? ...हमें स्वीकार करना चाहिए कि उसमें शिक्षा का विशेष महत्व नहीं है, क्योंकि शिक्षित होने के बावजूद लोग गलतियां कर सकते हैं।... पहले हम गांवों की बात करेंगे, क्योंकि अभी भी हमारे अधिकांश देशवासी गांवों में ही रहते हैं। अभी जो प्रणाली प्रचलित है तथा जो 1952 और 1957 में भी अपनाई गई थी, वह यह हैकि एक कमरे में उतनी मतपेटियां रखी जाती हैं, जितने उम्मीदवार होते हैं और प्रत्येक पेटी पर एक उम्मीदवार का चुनाव-चिह्न अंकित होता है। यदि दस उम्मीदवार होंगे, तो दस पेटियां होंगी। ...अब उसे अनेक मतपेटियां न देखकर एक कागज पर बने चुनाव चिह्नों में से एक चिह्न चुनना होता है। ...मैं ऐसे अनेक मामले जानता हूं, जिनमें मतपेटियां इस प्रकार रख दी जाती हैं कि आदमी अपनी पसंद की पेटी नहीं तलाश कर पाता और मतपत्र को वहीं कहीं डाल देता है अथवा अपने साथ ही लेकर चला जाता है। मैं समझता हूं, जब एक व्यक्ति अनेक पेटियों में से चिह्न देखकर अपनी पसंद की पेटी तलाश कर सकता है, तो कोई कारण नहीं कि वह मतपत्र पर भी वह चिह्न न तलाश कर सके, जिस पर वह निशान लगाना चाहता है। ...वास्तव में मेरा तो विचार यह है कि जो प्रणाली हम अब अपनाने जा रहे हैं, वह पहले वाली प्रणाली से अधिक सरल है।... मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि हमारे मतदाता इतने जाहिल हैं। बात वास्तव में यह है कि हम उन्हें भली प्रकार समझाते नहीं हैं। शिक्षा का इससे कोई संबंध नहीं है। ...जिन बुराइयों के निराकरण के लिए यह प्रणाली निकाली गई थी, वे अनेक हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि गरीब मतदाता मतपत्रों को बाहर ले जाकर बेच देते थे। प्रजातंत्र के लिए इससे अधिक खतरनाक चीज कोई नहीं है। वर्तमान प्रणाली में मतदाता मतपत्र को बाहर नहीं ले जा सकेगा, क्योंकि मतपत्र निर्वाचन अधिकारी की उपस्थिति में पेटी में डाला जाएगा।.

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, बुधवार 24 अप्रैल 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

श्री पांचजन्य फाउंडेशन द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया श्री हनुमान जन्मोत्सव

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल की पूर्णिमा तिथि को हनुमान जयंती मनाई जाती है यह पूरे देश भर में हर्ष और उल्लास के साथ मनाई जाती है। इसी कड़ी में आज रायपुर के एनआईटी कॉलेज के समीप श्री पांचजन्य फाउंडेशन द्वारा हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में प्रसादी वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया एवं प्रसाद ग्रहण किया। इस बारे में अधिक जानकारी देते हुए संस्था के अध्यक्ष आशीष झा ने बताया की हम सब जानते हैं कि हनुमान जी कलयुग के देवता हैं और वे अपने भक्तों का संकट दूर करते हैं। इसी विचार के साथ सभी के कल्याण और प्रदेश के साथ देश के कल्याण के उद्देश्य से आज हनुमान जन्मोत्सव पर प्रसाद वितरण का कार्यक्रम रखा गया था जिसमें भगवान को भोग लगाकर प्रसाद का वितरण किया गया जिसे श्रद्धालुओं ने बड़े चाव के साथ में ग्रहण किया। उन्होंने बताया कि इस दौरान संस्था के सदस्य विद्या भूषण सिन्हा, पियूष मिश्रा, विश्वनाथ देवांगन एवं श्रद्धालु गण उपस्थित थे।

अमिटी यूनिवर्सिटी बूटकैम्प का आयोजन करेगी 29 अप्रैल से, 9 विश्वविद्यालय के विद्यार्थी लेंगे हिस्सा

रायपुर (आरएनएस)। शिक्षा मंत्रालय की इनोवेशन सेल ऑफ एआईसीटीई ने देशभर इनोवेशन डिजाईन और उद्यमिता बूटकैम्प के तीसरे चरण की शुरूआत प्रारंभ कर दी है। इसी कड़ी में अमिटी यूनिवर्सिटी रायपुर 29 अप्रैल से 03 मई तक 9 चयनित शहरों में बूटकैम्प का आयोजन कर रही है। विश्वविद्यालय के कुलपति पीयूषकांत पाण्डेय एवं उपाध्यक्ष प्रोफेसर रोशन मैथ्यू ने प्रेस क्लब रायपुर में आयोजित पत्रकारवार्ता में बताया कि उक्त आयोजन में 225 विद्यार्थी हिस्सा लेंगे, जिसमें 100 विद्यार्थी विश्वविद्यालय के होंगे। अन्य विश्व विश्वविद्यालयों में ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी देहरादून, श्री नारायण कुरूकुलम कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, एर्नाकुलम केरल, नेशनल इंस्ट्यूटी ऑफ गोवा, एएलई टेक्नालॉजिकल यूनिवर्सिटी हुबली कर्नाटक, एसएसएम कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग बारामुला कश्मीर, कलासलिंगम अकादमी ऑफ रिसर्च एंड एजेकेशन तमिलनाडु, महाराजा अग्रसेन यूनिवर्सिटी सोलन एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वराणसी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी शामिल होंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ.एन. के. वर्मा करेंगे जबकि समापन समारोह के मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल होंगे।

चुनाव के चलते दो दिन बंद रहेगी शराब दुकानें

रायपुर, 23 अप्रैल (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण के चुनाव की वोटिंग 26 अप्रैल को होगी। इस दौरान रायपुर जिले में कुछ जगहों पर 48 घंटे के लिए ड्राई डे रहेगा। कलेक्टर गौरव कुमार ने रायपुर जिले की कुछ शराब दुकानें बंद रखने का आदेश जारी किया है। इस दौरान शराब दुकानें और सभी बार बंद रहेंगे। दरअसल, तीसरे चरण में कांकेर, महासमुंद और राजनांदगांव सीट पर वोटिंग होनी है। लिहाजा, महासमुंद और गरियाबंद जिले के आस-पास रायपुर जिले की सीमा में आने वाली 6 शराब दुकानें 24 अप्रैल की शाम 5 बजे से 26 अप्रैल को वोटिंग खत्म होने तक बंद रहेंगी। कलेक्टर के आदेश के मुताबिक देशी-विदेशी मदिरा दुकान नवापारा, विदेशी शराब दुकान गुल्लू, कंपोजिट मदिरा दुकान नर्मदापारा (गुल्लू), आरंग की देशी और विदेशी शराब दुकान बंद रहेंगी। आदेश के मुताबिक ये दुकानें महासमुंद लोकसभा सीट के 3 किलोमीटर सीमा में स्थित हैं। कलेक्टर ने आदेश का कड़ाई से पालन करने को कहां है।

मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ पत्रकार शशिकांत कोन्हेर के निधन पर जताया शोक

रायपुर (आरएनएस)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने बिलासपुर प्रेस क्लब के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकस्वर टीवी के पूर्व संपादक श्री शशिकांत कोन्हेर के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने शोकसंतप्त परिवारजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए मृत आत्मा की शांति की प्रार्थना की है।

विश्व प्रसिद्ध भगवान महावीर जी का लक्खी मेला

भगवान महावीर के जयकारों के साथ आज निकलेगी विशाल रथयात्रा, खडगासन चौबीसी के होगें अभिषेक

जयपुर (विश्व परिवार)। पूरे विश्व को जीओ और जीने दो का संदेश देने वाले, जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का 2623 वां जन्म कल्याणक महोत्सव (महावीर जयन्ती) पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में गुरुवार 18 अप्रैल से शुरू हुए आठ दिवसीय वार्षिक लक्खी मेले में बुधवार को मंदिर प्रांगण से विशाल रथयात्रा निकलेगी। जो गम्भीर नदी के तट पर जायेगी जहां भगवान महावीर के पंचामृत कलशाभिषेक होगें। इससे पूर्व मंगलवार को मेले में सामूहिक पूजा, मेला निरीक्षण, सामूहिक आरती, शास्त्र प्रवचन, सांस्कृतिक संध्या एवं राष्ट्रीय कवि सम्मेलन के आयोजन किये गये।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल एवं मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन ने बताया कि मंगलवार को प्रात: श्री वीर संगीत मण्डल जयपुर के सहयोग से चरण चिन्ह छत्री पर तथा दोपहर में कटला पश्चिमी पाण्डाल में सामूहिक पूजन की गई।

प्रचार प्रसार मुख्य संयोजक सुरेश सबलावत के अनुसार अपरान्ह 4.00 बजे उप जिला कलेक्टर एवं प्रबन्धकारिणी समिति के अध्यक्ष एडवोकेट सुधांशु कासलीवाल द्वारा मेले का निरीक्षण किया गया। मार्ग में जगह जगह स्वागत व सम्मान किया गया। सायकांल कटला प्रांगण में भगवान महावीर की संगीतमय आरती की गई। तत्पश्चात शास्त्र प्रवचन में धर्म के सिद्धांत समझाये गये।

रात्रि में कटले के पूर्वी पाण्डाल में महिला जागृति संघ जयपुर द्वारा सांस्कृतिक संध्या हुई जिसमें रंगारंग कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुति दी गई।

कोषाध्यक्ष एवं कवि सम्मेलन मुख्य संयोजक विवेक काला ने बताया कि रात्रि में सांस्कृतिक मंच पर राष्ट्रीय कवि सम्मेलन हुआ जिसमें कवियों ने भगवान महावीर के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कविता पाठ किया।

अध्यक्ष सुधान्शु कासलीवाल एवं मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन के मुताबिक बुधवार 24 अप्रैल को प्रात: खडगासन चौबीसी के अभिषेक होगें। दोपहर में 2 बजे मंदिर प्रांगण से विशाल रथयात्रा निकलेगी जो नदी तट पर जावेगी जहां श्री जी के कलशाभिषेक होगें।तत्पश्चात सायंकाल 5.00 बजे नदी तट पर घुड़दौड़, ऊंट दौड के आयोजन होगें। प्रचार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा के अनुसार गुरुवार 25 अप्रैल को नदी तट पर ग्रामीण खेलकूद एवं कुश्ती-दंगल के बाद मेले का समापन होगा। मेले में जैन अजैन सभी लाखों की संख्या में श्रद्धालुगण शामिल होगें। -**विनोद जैन %कोटखावदा**

स्वीप संध्या का आयोजन 26 अप्रैल की शाम मरीन ड्राईव तेलीबांधा में

रायपुर जिला प्रशासन का मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

मॉडल अधीर-जया भगवानानी के साथ सीनियर सिटीजन, कपल्स, युवा वोटर करेंगे रैम्प वॉक

रायपुर (आरएनएस)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह के मार्गदर्शन में जिले के मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित करने संचालित किए जा रहे जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला में शुक्रवार 26 अप्रैल की शाम भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम स्वीप संध्या का आयोजन किया जा रहा है। प्रख्यात मॉडल अधीर भगवानानी और जया भगवानानी का रैम्प वॉक इस अवसर पर होगा, यही नहीं अविवाहित, विवाहित, वरिष्ठ मतदाता, ट्रांसजेंडर्स, दिव्यांग मतदाताओं के साथ ही साथ तीन पीढ़ियों के सदस्य रैम्प वॉक कर सभी को मतदान का संदेश देंगे। स्वीप संध्या की शुरूआत मरीन ड्राईव तेलीबांधा में शाम 06:30 बजे होगी। युवा वोटर्स, अविवाहित, नववधू, तीन पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करने वाले दादी, माँ, बेटी और दादा-दादी एवं पोता, 60 वर्ष से अधिक आयु वाले पुरूष व महिला मतदाता, ट्रांसजेंडर्स, दिव्यांग इस स्वीप संध्या में के रैम्प वॉक के प्रतिभागी होंगे। इसके लिए निर्धारित श्रेणियों के अंतर्गत 18 से 25 वर्ष के अविवाहित मतदाता, 01 वर्ष की नवविवाहिता मतदाता के साथ महिला पुरूष मतदाता वर्ग में पृथक-पृथक एक साथ तीन पीढ़ियां व ट्रांसजेंडर्स एवं दिव्यांग मतदाता रैम्प वॉक कर मतदान का संदेश देंगे। स्वीप संध्या में भाग ले रहें प्रतिभागियों को शाम 05 बजे तक अनिवार्य रूप से कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने के लिए कहा गया है।

रायपुर जिला प्रशासन के इस भव्य सांस्कृतिक आयोजन में कोई भी प्रतिभागी पंजीयन करा सकते है। इसके लिए जिला प्रशासन, नगर निगम, रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल्स जैसे- फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम में स्वीप संध्या संबंधी क्रिएटिव में प्रदर्शित क्यू-आर कोड स्कैन कर अपना नि:शुल्क पंजीयन करा सकते है। विशेष प्रदर्शन कर मतदान जागरूकता का संदेश देने वाले प्रतिभागियों को जिला प्रशासन रायपुर द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। स्वीप संध्या से संबंधित अधिक जानकारी के लिए महिला बाल विकास विभाग की परियोजना अधिकारी रितु परिहार दूरभाष क्रमांक 62667-94466 एवं अनुपमा तिवारी 98271-87140 से संपर्क कर सकते है।

पीएम की सुरक्षा को लेकर सुरक्षा के चाक-चौबंद व्यवस्था

रायपुर (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 2 दिवसीय छत्तीसगढ़ प्रवास पर राजधानी रायपुर में सुरक्षा के चाक-चौबंद व्यवस्था किया गया है। प्रधानमंत्री कल सुबह 08-10 बजे के मध्य वापस माना विमानतल जायेंगे। इस दौरान व्हीव्हीआई मार्ग में सामान्य आवागमन बाधित रहेगा साथ ही राम मंदिर से माना विमानतल तक व्हीआईपी रोड में भी सामान्य आवागमन बाधित रहेगा। दिनांक 23.04.2024 को फ्लाईट नंबर 6इल801,6इल885,62362 व अन्य फ्लाइट से प्रस्थान करने वाले यात्री रूट डायवर्सन का ध्यान रखते हुए अतिरिक्त समय लेकर घर से निकले एवं निम्नानुसार वैकल्पिक मार्ग का उपयोग कर आवागमन कर सकते है:-01. माना विमानतल जाने के लिए पचपेड़ीनाका चौक/ केनाल रोड से लालपुर-देवपुरी (धमतरी रोड) होकर माना कैम्प से पुराने टर्मिनल में अपना वाहन पार्क कर विमानतल में प्रवेश कर सकेंगे। 02. जी.ई. रोड से मैग्नेटो माल-लाभांडी चौक-ज़ोरा से सेरीखेड़ी होकर नया रायपुर प्रवेश मार्ग से जैनम भवन मार्ग से पुराना टर्मिनल में अपना वाहन पार्क कर विमानतल में प्रवेश कर सकेंगे।

नेवई के बच्चों ने मनवाया अपना लोहा, राष्ट्रीय प्रवीण्य सह साधन छात्रवृत्ति परीक्षा में 17 विद्यार्थी हुए छात्रवृत्ति के पात्र

दुर्ग (विश्व परिवार)। दुर्ग विकासखंड में स्थित शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला नेवई में कक्षा आठवीं के अध्यनरत बच्चों ने शाला समुदाय और विभाग का नाम रोशन किया है। NMMSE (राष्ट्रीय प्रवीण्य सह साधन छात्रवृत्ति) परीक्षा में नेवई माध्यमिक शाला विद्यालय से कुल 22 विद्यार्थियों ने परीक्षा हेतु अपना पंजीयन कराया था। जिसमें से 17 विद्यार्थी इस परीक्षा में छात्रवृत्ति के लिए पात्र हुए हैं। इस सफलता के लिए विकासखंड शिक्षा अधिकारी गोविंद साव के साथ-साथ शाला परिवार एवं समुदाय के सभी सदस्यों का मन प्रफुल्लित है तथा सभी ने विद्यार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया है।

संस्था के प्रधान पाठक गजेंद्र कुमार बैस जी का कहना है कि शाला परिवार की एकजुटता तथा शिक्षकों के प्रयास का यह परिणाम है। उनके बच्चों के इस कठोर परिश्रम से यह लक्ष्य हासिल कर पाए हैं। पूरे वर्ष भर बच्चों के साथ में माता-पिता तथा शिक्षक अपना अध्यापन कार्य संचालित करते रहे। शिक्षिका डॉक्टर नीलांजना जैन ने विद्यार्थियों के इस परिश्रम में प्रत्येक दिवस 20 मिनट का मोटिवेशनल क्लास संचालित कराती थी। जिससे बच्चे ज्यादा से ज्यादा मोटिवेट होते थे तथा अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रेसित होते थे। इस मोटिवेशनल क्लास ने बच्चों को कहीं भी भटकने नहीं दिया तथा अपने लक्ष्य के प्रति एकजुट होकर केंद्रित रहे।

पूरे सत्र बच्चों के अलग-अलग टेस्ट तथा अलग-अलग तरीके से आकलन लिए गए जिसमें बच्चों के गुणवत्ता को शाला परिवार समय-समय पर परख पाए थे। छोटी-छोटी नैतिक मूल्यों की कहानियों को सुनकर बच्चों को अपने लक्ष्य के प्रति केंद्रित रखा जाता था। इन कहानियों के अभ्यास से बच्चों में मात्रात्मक त्रुटि दूर करने में सफलता मिली। बच्चों की भाषा शैली के साथ साथ बच्चों के आचरण में भी इसका लाभ देखने को मिला। इस प्रक्रिया से वर्तनी में सुधार देखा गया।

प्रात: काल 4 बजे का रूटीन प्रत्येक बच्चे के लिए सेट किया गया। शिक्षिका नीलांजना जैन मैडम द्वारा बच्चों को प्रात: काल 4ः00 बजे फोन करके उठाया जाता था तथा उन्हें कुछ टास्क दिए जाते थे। उस टास्क को करने के बाद जब बच्चे विद्यालय आते थे तब उन्हें टास्क की क्रियाविधि कक्षा में संपादित कराई जाती थी। प्रत्येक दिन इस प्रकार की गतिविधि होने से बच्चों में पढ़ाई के प्रति जुड़ाव तथा लगन बढ़ता चला गया। जिससे बच्चे ज्यादा से ज्यादा स्वयं से मेहनत करने की दिशा में आगे बढ़ते चले गए। टाइम्स अकादमी से तथा समुदाय से राहुल सर और राजेश सर द्वारा विद्यालय के इन बच्चों को सहयोग मिला। रीजनिंग के बहुत सारे सवालों के जवाब से बच्चों के समस्या का समाधान होता चला गया। बच्चों को गणित के प्रति ज्यादा दिलचस्पी भी बढ़ाते चली गई। विद्यालय के इस सफलता से विकासखंड शिक्षा अधिकारी गोविंद साव ने स्वयं आकर बच्चों का उत्साह वर्धन किया तथा शाला परिवार va bachhon को बधाई दी।

NMMSE परीक्षा में सफलता पूर्वक चयन करने वाले बच्चों का नाम- आरती मारकंडे, खुशबू फैलिन साहू पूर्वी माहेश्वरी समीर, यादव निहाल देवांगन, हिना कुरेशिया संगीता वर्मा, खुशबू धनेश साहू अंजलि साहू, भवानी सेन, हिमानी विश्वकर्मा, मानसी कौशिक, रोशन साहू, मयंक साहू, सुमन निषाद, शौर्य भारती, दिव्यम कोसले। इस गौरवशाली पल में प्रधान पाठक गजेंद्र कुमार बैस शिक्षक शशि कला वर्मा, रजनी यादव, उषा किरण कौशिक, ज्योति वर्मा, अमृता यादव, संत ज्ञानेश्वर मरकाम, डा नियलंजना जैन सभी ने बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना की।

सेक्टर अधिकारियों का मतदान संबंधी कमिशनिंग कार्य का हुआ प्रशिक्षण

गंभीरता के साथ त्रुटि विहिन मतदान कराएं : कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह

मास्टर ट्रेनर ने वीडियो और पीपीटी के माध्यम से दी मतदान प्रक्रिया की जानकारी

रायपुर (आरएनएस)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत आज कलेक्ट्रेट स्थित रेडक्रॉस सभाकक्ष में सेक्टर अधिकारियों को मतदान के लिए कमिशनिंग का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने कहा कि सभी सेक्टर अधिकारी कमिशनिंग का कार्य बेहतर ढंग से करें। कमिशनिंग के कार्य को जल्दबाजी में न करें। कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा कि बिना किसी त्रुटि के गंभीरता के साथ मतदान कार्य कराएं। कमिशनिंग कार्य के लिए वीडियो भी तैयार किया गया है, समय-समय पर वीडियो को देखकर कमिशनिंग की बारिकियों को समझें और फ्लो चार्ट के माध्यम से निर्वाचन कार्य कराएं। हर मतदान केंद्र में मतदान दलों के लिए मेडिकल किट उपलब्ध कराए गए है। सेजबहार के स्ट्रॉग रूम में पेयजल, टॉयलेट की बेहतर व्यवस्था की गई है। नाश्ता और भोजन भी समय-समय पर दिया जाएगा। मतदान केंद्र से लेकर स्ट्रांग रूम तक किसी भी मतदान दल को असुविधा नहीं होगी। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप, अपर कलेक्टर श्रीमती निधि साहू समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी गण मौजूद रहे।

राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर डॉ. राकेश डेढगवे और श्री अजीत हुर्डेत ने प्रशिक्षण के दौरान वीडियो के माध्यम से मतदान प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी। प्रशिक्षण पूर्व वीडियो के माध्यम से जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह के निर्वाचन कार्य का संदेश दिखाया गया। फ्लो चार्ट के माध्यम से निर्वाचन कार्य को पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। कमिशनिंग संबंधी कार्य को पूर्ण करने के लिए पांच अलग-अलग वीडियो भी तैयार किए गए है और सेक्टर अधिकारियों को सोषल मीडिया ग्रुप के माध्यम से प्रदान किए गए। प्रशिक्षण उपरांत सभी सेक्टर अधिकारियों को एमसीक्यू सवाल गूगल फॉर्म से दिए गए। निर्धारित समय अवधि में सारे सवाल को पूर्ण कर सबमिट किए गए।

संस्कृति : एनटीपीसी कोरबा में मैत्री महिला समिति का 43वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया

कोरबा (विश्व परिवार)। एनटीपीसी कोरबा के महिला क्लब, मैत्री महिला समिति ने 21 अप्रैल 2024 को अपना 43वां वार्षिकोत्सव मनाया। श्री सरित माहेश्वरी, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा, मुख्य अतिथि थे। महिला क्लब की सदस्यों ने 43वें वार्षिकोत्सव की शुरुआत गणेश वंदना से की, जिसके बाद छत्तीसगढ़ का स्वागत गीत गाया। मैत्री महिला समिति की अध्यक्ष श्रीमती राखी माहेश्वरी ने सभा को संबोधित किया और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया।

वार्षिकोत्सव में मैत्री महिला समिति की सदस्यों द्वारा रंग-बिरंगे परिधानों, नाटक, मधुर संगीत और नृत्यों का प्रदर्शन किया गया। भारत के सात अलग-अलग राज्यों के नृत्य, 'संस्कृति' प्रस्तुत किए गए, जिसमें देश की विविधता को दर्शाया गया और देश के विभिन्न कोनों से आवाजें भी सुनी गईं। वार्षिक दिवस कार्यक्रम में क्लब सदस्यों के जीवनसाथियों को आमंत्रित किया गया था और उन्होंने भी कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। मनोरंजक खेल आयोजित किए गए, तथा दर्शकों और प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और शाम का आनंद लिया। श्री सरित माहेश्वरी, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा ने अभिनंदन भाषण में एमएमएस क्लब और उसके सदस्यों को वार्षिक दिवस पर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बधाई दी और आने वाले दिनों के लिए शुभकामनाएं दीं।

कार्यक्रम के दौरान महिला क्लब के सभी वरिष्ठ सदस्य और सदस्य, परिवार और एनटीपीसी कोरबा के कर्मचारी भी मौजूद थे। कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। एमएमएस क्लब का वार्षिक दिवस समारोह एक शानदार सफलता थी और अतिथियों और शुभचिंतकों द्वारा इसकी बहुत सराहना की गई।

लोकसभा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के लिए अधिकतम व्यय सीमा 95 लाख रूपए निर्धारित

दुर्ग (आरएनएस)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दुर्ग लोकसभा क्षेत्र के लिए अधिकृत व्यय प्रेक्षक प्रसन्ना वी. पत्तनसेठ्ठी की उपस्थिति में आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण के संबंध में निर्वाचन लड़ने वाले अभ्यर्थियों हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान व्यय प्रेक्षक श्री प्रसन्ना ने जानकारी दी कि जिले के सभी विधानसभा क्षेत्रों के लिए अलग-अलग सहायक व्यय प्रेक्षक एवं लेखा टीम नियुक्त किया गया है, जो निर्वाचन के दौरान व्यय से संबंधित समस्त गतिविधियों पर विशेष निगरानी रखेंगे। सहायक व्यय प्रेक्षक श्री ऋषभ जैन ने प्रशिक्षण में बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों के लिए चुनावी व्यय हेतु अधिकतम 95 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है। उम्मीदवारों द्वारा अवैध खर्च को रोकने के लिए प्रमुख कानूनी प्रावधानों और उम्मीदवारों के बैंको से संबंधित जानकारी, अभ्यर्थी द्वारा पृथक से खाता खोलने, खाते का रख-रखाव आदि संबंध में बताया गया।

जैन मिलन द्वारा भगवान महावीर स्वामी जी के जन्म कल्याणक महोत्सव पर वाहन रैली एवं खीर वितरण

सागर (विश्व परिवार)। जैन मिलन मकरोनिया क्षेत्र क्रमांक 10 के द्वारा 1008 श्री महावीर स्वामी के जन्म कल्याण महोत्सव के अवसर पर सुबह विशाल वाहन रैली सभी जैन मंदिरों से होकर अंकुर कॉलोनी जैन मंदिर में समापन हुआ रैली का जगह-जगह फल, मिष्ठान स्वागत हुआ। दोप. में श्री जी की शोभायात्रा में अपनी सहभागिता दी तथा इस अवसर पर समाज के सैकड़ो परिवारों ने अपने-अपने घरों के सामने रंगोली बनाकर श्री जी की अगवानी करते हुए आरती उतारी एवं श्रीफल अर्पित किया। जैन मिलन द्वारा मकरोनिया चौराहा गुलझार भवन से खीर वितरण किया गया। कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के द्वारा दीपप्रज्वलन एवं महावीर प्रार्थना के साथ अति वीर कमलेन्द्र जैन राष्ट्रीय मंत्री, श्री गुलझारीलाल जैन वरिष्ठ समाजसेवी, अतिवीर अरुण चंदेरिया क्षेत्रीय अध्यक्ष, वीर सुरेश जैन अध्यक्ष अध्यक्ष द्वारा किया गया।वीर सुरेश जैन एवं राजेश जैन ने बतलाया कि खीर वितरण का कार्यक्रम जैन मिलन द्वारा पिछले 15 वर्षों से लगातार किया जा रहा है आज भी महावीर स्वामी के 2623 वें जन्मोत्सव जन्म कल्याणक की खुशी में सदस्यों द्वारा बधाई नृत्य किया एवं लगभग 3000 भक्तों को प्रसादी के रूप में खीर का वितरण किया गया। इस महोत्सव की विशेषता यह रही की जैन समाज के सदस्यों के अलावा जैनेत्तर बंधुओ ने विशेष तौर पर स्वामी विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी केंद्र सागर के पदाधिकारी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं खीर वितरण में पूर्ण सहयोग किया।इस अवसर पर अतिथियों के अलावा मुख्य रूप से वीर रविंद्र जैन मंत्री, वीर निशिकांत सिंघई प्रचार मंत्री, वीर हेमचंद्र जैन कार्यकारी अध्यक्ष, वीर पीसी जैन वरिष्ठ उपाध्यक्ष, वीर शीतल जैन संगठन मंत्री, वीर प्रकाश जैन मोदी मार्बल संगठन मंत्री, वीर जिनेश जैन बहरोल क्षेत्रीय उपाध्यक्ष, वीर संजय जैन शक्कर क्षेत्रीय कार्यकारी अध्यक्ष वीर मनीष जैन विद्यार्थी मीडिया प्रभारी एवं क्षेत्रीय संयोजक, वीर प्रदीप जी क्षेत्रीय संयोजक, वीर डालचंद जैन राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, वीर अजीत जैन बैंक संयुक्त मंत्री, वीर राजेश मलैया संयुक्त मंत्री, वीर राकेश जैन पिपरिया, वीर अमित जैन हैंडलूम, वीर संतोष चौधरी, वीर सुनील जैन शाहगढ, वीर आनंद जैन, वीर संजय जैन शिक्षक सांस्कृतिक मंत्री, वीर अनिल जैन सहारा, वीर ऋषभ जैन उपाध्यक्ष, वीर सुमित सिंघई, वीर अरुण जैन व्याख्याता उपमंत्री, वीर शैलेंद्र प्राचार्य उपमंत्री, वीर उत्तमचंद जैन सह कोषाध्यक्ष, राकेश जैन एमपीईवी विशेष कार्यकारिणी सदस्य वीर पवन सिंघई कार्यकारिणी सदस्य, वीर एडवोकेट कमलेश नायक विधि मंत्री, वीर संतोष चौधरी, वीर मृगेंद्र जैन नेता, श्री जसवंत सिंह ठाकुर पार्षद, श्री नरेंद्र रोहित जी, श्री जस्सी सरदार के साथ-साथ स्वामी विवेकानंद केंद्र कन्याकुमारी केंद्र सागर के प्रमुख पदाधिकारी श्री आर एन पात्रा, विभाग संपर्क प्रमुख श्री चंद्र प्रकाश शुक्ला, नगर प्रमुख श्री सुकमाल जैन, सहनगर प्रमुख श्री आशीष द्विवेदी, संपर्क प्रमुख श्री गौरव राजपूत, कार्य पद्धति प्रमुख श्री दिनेश दुबे जी, केंद्र वर्ग प्रमुख श्री संदीप जी व्यवस्था प्रमुख श्री राजीव भार्गव, वीर मुकेश जैन वीर मनोज जैन वीर सुनील जैन, वीर नितेश जैन, वीर राकेश जैन, वीर राजेश सिंघई बैंक अधिकारी, वीर आरके जैन, वीर आलोक जैन वीर प्रेमचंद जैन, वीर दिनेश जैन, वीर महेश जैन के अलावा बड़ी संख्या में वीर बंधु उपस्थित थे कार्यक्रम का संचालन वीर सुमत सिंघई, वीर ऋषभ शाहगढ़ द्वारा किया गया कार्यक्रम के अंत में वीर रविंद्र जैन मंत्री एवं वीर मनीष जैन विद्यार्थी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। -**मनीष शास्त्री सागर**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

प्रादेशिकी

रायपुर बुधवार 24 अप्रैल 2024

शांति धारा एवं पूजन के उपरांत निकाली गई शोभायात्रा

भगवान महावीर स्वामी के जन्मोत्सव पर निकाली शोभायात्रा

मनेन्द्रगढ़। स्थानीय दिगंबर जैन समाज के द्वारा जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया. उक्त कार्यक्रम की बेला में प्रातः7:00 बजे से श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी का जन्मभिषेक किया गया ,शांति धारा एवं पूजन के उपरांत भगवान महावीर स्वामी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसमें समाज के सभी सदस्यों महिलाओं एवं बच्चों ने पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया.शोभायात्रा के दौरान नगर का माहौल भक्ति में डूब गया और भगवान महावीर स्वामी के जयकारो एवं जैन धर्म के नारों से पूरा नगर गुंजायमान हो उठा.यह शोभायात्रा श्री पार्श्व नाथ दिगंबर जैन मंदिर से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गो से गुजरती हुई वापस जैन मंदिर में ही समाप्त हुई.तत्पश्चात भगवान महावीर का अभिषेक करके वेदी पर विराजमान किया गया ,इस अवसर पर जैन समाज के युवाओं के द्वारा नगर में ठंडा शरबत का वितरण किया गया , शाम को मंदिर में भगवान की भव्य आरती की गई । इस अवसर पर सकल दिगंबर जैन समाज मनेंद्रगढ़ के संरक्षक ज्ञानचंद जैन , अजीत कुमार जैन,महेंद्र जैन,अनिल कुमार जैन, रानू जैन ,श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर समिति के अध्यक्ष रितेश जैन,उपाध्यक्ष रवि जैन, सचिव सौरभ जैन, कोषाध्यक्ष विजयंत जैन ,पीयूष जैन,शैलेश जैन सुनील जैन, बब्लेश जैन, विपिन जैन, अरविंद जैन ,आशीष जैन,देवेंद्र जैन, नीरज जैन,विवेक जैन, संजय जैन, अखिलेश जैन, अशोक जैन, राजेश जैन जिला पंचायत, रूपांक जैन ,रोमिल जैन ,महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती रत्ना जैन, मुक्ति जैन, संगीता जैन, नीति जैन ,गुणमाला जैन ,कमला जैन, कल्पना जैन, सुलेखा जैन ,संध्या जैन,शुभ्रा जैन सहित समाज के सभी लोगों का भरपूर योगदान रहा।

गर्मी से राहत दिलाने पूर्व सांसद प्रतिनिधि द्वारा लगाया गया वाटर कूलर

किरंदुल। छत्तीसगढ़ में इन दिनों भीषण गर्मी पड़ रहीं हैं।दंतेवाड़ा जिले की किरन्दुल नगर में भी गर्मी के कारण लोगों का बेहाल हो रहा हैं। इन सब के मद्देनजर किरन्दुल के पूर्व सांसद प्रतिनिधि राजू रेड्डी द्वारा राहगीरों को भीषण गर्मी से राहत दिलाने के लिए वार्ड क्रमांक 02 रामपुर कैम्प चौक में सोमवार वाटर कूलर का स्थापना किया गया हैं।राजू रेड्डी ने बताया लोगों को इस भीषण गर्मी में शीतल पेयजल मिल सके इस उद्देश्य से वाटर कूलर लगाया गया हैं।मौके पर पूर्व पार्षद सरिता रेड्डी व वार्डवासी उपस्थित थे।

दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिक (85 प्लस) मतदाताओं को मतदान दिवस पर निःशुल्क परिवहन सुविधा

गरियाबंद। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दौरान दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिक (85 प्लस) आयु वर्ग के मतदाताओं को मतदान दिवस के दिन मतदान केन्द्र पहुंचने सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दीपक कुमार अग्रवाल के निर्देश पर प्रत्येक जनपद पंचायत में दो-दो मतदान रथ तथा प्रत्येक नगरीय निकायों में एक-एक इस प्रकार कुल 15 मतदान रथ रवाना किया जाएगा। मतदान केन्द्रवार दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिकों का चिन्हांकन कर लिया गया है। तथा उनके मांगे जाने पर मतदान दिवस को उनके आवास स्थल से मतदान केन्द्र तक लाने एवं मतदान पश्चात् वापस उसके आवास स्थल तक पहुंचाने निःशुल्क परिवहन सुविधा की व्यवस्था की गई है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दीपक कुमार अग्रवाल ने बताया कि जिले में 6 हजार 310 दिव्यांग मतदाता, वरिष्ठ नागरिक (85 प्लस) आयु वर्ग के 1453 मतदाता है। ऐसे मतदान केन्द्र को चिन्हांकित किया गया है। जहां इन वरिष्ठ नागरिक (85 प्लस) और दिव्यांग मतदाताओं को निःशुल्क परिवहन सुविधा दी जाएगी। उन्होंने बताया कि उक्त वाहन को वरिष्ठ नागरिक/दिव्यांग मतदाता रथ का नाम दिया गया है। जिसका हेल्पलाईन नम्बर - 1950 है। इसके अलावा सक्षम एप्प के माध्यम से ऑनलाईन आवेदन कर सकते है। उन्होंने बताया कि दिव्यांगजनों एवं वरिष्ठ नागरिकों को मतदान दिवस पर दिए जाने वाली निःशुल्क परिवहन सुविधा के लिए उप संचालक समाज कल्याण विभाग नोडल अधिकारी बनाया गया है।

जिले के सभी मतदान केन्द्रों में दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिक (85 प्लस) के लिए विशेष इंतजाम किया गया है। मतदान केन्द्र तक पहुंचने के लिए सभी मतदान केन्द्रों में व्हील चेयर भी रखा गया है। समाज कल्याण विभाग के उप संचालक ने बताया कि आयोग के निर्देश पर यह व्यवस्था की जा रही है। दिव्यांग एवं बुजुर्ग मतदाताओं को मुख्य मार्ग से मतदान केन्द्र और मतदान केन्द्र से अंदर जाने के लिए व्हील चेयर व्यवस्था कर ली गई है। सभी श्रेणियों के मतदाताओं से मतदान करने की अपील जिला निर्वाचन अधिकारी गरियाबंद ने की है।

सुखाताल और करमतरा में चलाया गया मतदाता जागरूकता अभियान

बेमेतरा। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी रणबीर शर्मा के आदेशानुसार एवं सीईओ जिला पंचायत टेकचंद अग्रवाल के मार्गदर्शन में जिले में मतदाता जागरूकता अभियान निरंतर जारी हैं। जिन क्षेत्रों में पिछले चुनाव में70 प्रतिशत से कम मतदान हुआ हैं, वहा मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है इसी के तहत आज जनपद पंचायत बेमेतरा एवं नवागढ़ विधानसभा के ग्राम पंचायत करमतरा और सूखाताल मे जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी पी एल धुर्वे अपने स्टाफ और सचिवो के साथ पहुंचकर बुजुर्ग मतदाता एवं पहली बार वोट डालने वाले युवा मतदाताओं का नारियल एवं फूल चावल देकर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होंने उपस्थित सभी नागरिकों कों 7 मई को वोट डालने निर्मंत्रित किया साथ ही मतदाताओं को शपथ भी दिलाया गया। शपथ पश्चात ग्रामो मे भ्रमण कर घर घर जाकर पीला चावल और फूल देकर 7 मई को अपने मताधिकार का प्रयोग करने निमंत्रण दिया गया। उक्त कार्यक्रम में एडीशनल सीईओ भरत बंजारे, बीपीएम एवं बड़ी संख्या में सचिव गण और बिहान केडर के सदस्य स्वयं सहायता समूह के महिलाएं उपस्थित रहे।

कक्षा 9वीं में प्रवेश के लिए आवेदन 17 मई तक आमंत्रित

गरियाबंद। राजीव गांधी बाल भविष्य योजना अंतर्गत राज्य शासन द्वारा प्रदेश के अधिसूचित क्षेत्रों, आदिवासी उपयोजना क्षेत्र तथा नक्सल पीड़ित/प्रभावित क्षेत्रों में स्थित शालाओं में अध्ययनरत प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रयास आवासीय विद्यालयों में कक्षा 9वीं से 12वी तक उत्कृष्ट स्कूली शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर की मेडिकल एंव इंजीनियरिंग की प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने के लिए सघन तैयारी कराई जाती है। जिसके लिए कक्षा 09वीं में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित की गई है। सत्र 2024-25 में इन विद्यालयों के कक्षा 9वीं में प्रवेश के लिए ऑनलाईन आवेदन भरने की अंतिम तिथि 17 मई 2024 रात्रि 12 बजे तक निर्धारित की गई है। भरे गये आवेदन में त्रुटि सुधार 18 मई से 20 मई तक किया जा सकेगा। प्रवेश के लिए चयन प्राक्चयन परीक्षा 09 जून को सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित की जायेगी। ऑनलाइन लिंक में जाकर आवेदन भर सकते है। योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए आदिम जाति कल्याण विभाग के वेबसाईट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट ट्रायबल डॉट सीजी डॉट जीओवी डॉट इन का भी अवलोकन किया जा सकता है।

किरन्दुल में आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं द्वारा दिया बच्चों को दिया जा रहा हैं प्रशिक्षण

किरंदुल। किरन्दुल धरमपुर कैम्प स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में ग्रीष्मकालीन में भी बच्चों को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता शहनाज़, सहायिका रीना पाल द्वारा विभिन्न तरीकों से शिक्षा प्रशिक्षण दिया जा रहा हैं।जिसमें बाल विकास और मनोविज्ञान,बच्चों के लिए गीत और कविताएं, संतुलन आहार की अवधारणा के साथ खाद्य और पोषण की जानकारी एवम अन्य विषयों की शिक्षा दी जा रहीं हैं।साथ ही बच्चों को पौष्टिक आहार भी दिया जा रहा है।

कलेक्टर ने मतदान प्रतिशत बढ़ाने तथा मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था के संबंध में दिए निर्देश

मतदान केन्द्र में छांव की व्यवस्था के लिए स्थानीय स्तर पर टेंट के साथ ही पत्तियों से बने इकोफ्रेंडली मंडप बनवाएं : कलेक्टर

गरियाबंद। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री दीपक कुमार अग्रवाल ने जिले में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत मतदान का प्रतिशत बढ़ाने तथा मतदान दिवस में मतदान केन्द्रों में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के संबंध में अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिये है। उन्होंने कहा कि मतदान केन्द्रों में पेयजल, छांव, रैम्प, प्रकाश, फर्नीचर सहित अन्य बुनियादी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करे। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि गर्मी को ध्यान में रखते हुए मतदान केन्द्रों में विशेष तौर पर व्यवस्था करने की जरूरत है, इसके लिए प्रयास करें। मतदान केन्द्र में छांव की व्यवस्था के लिए स्थानीय स्तर पर टेंट के साथ ही पत्तियों से बने इकोफ्रेंडली मंडप बनवाएं। मतदान केन्द्रों में साफ-सफाई की व्यवस्था होनी चाहिए। सभी आवश्यक व्यवस्था के लिए सभी को टीमवर्क के साथ काम करने के लिए आदेशित किया गया है। कलेक्टर ने कहा कि शिशुवती माताओं, दिव्यांग एवं वरिष्ठ नागरिकों को लंबी कतार में खड़ा नहीं होना पड़े, इसके लिए उनके लिए अलग से कतार लगवाने एवं कुर्सियों की व्यवस्था निर्देश जारी किये गये है। दिव्यांग एवं बुजुर्ग मतदाताओं के लिए मतदान केन्द्रों में रैम्प होना चाहिए तथा व्हील चेयर की व्यवस्था होनी चाहिए। दिव्यांगजन एवं बुजुर्गों की मदद के लिए एनसीसी, स्काउट गाईड, एनआरएलएम की महिलाएं मतदान केन्द्र में उपस्थित रहें। कलेक्टर ने मतदान दलों के लिए वाहन की व्यवस्था के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि मतदान केन्द्र पहुंच मार्ग के संबंध में सभी को अवगत होना चाहिए। स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आवश्यक दवाइयों का किट भी उपलब्ध होना चाहिए। उन्होंने मतदान दलों के भोजन व्यवस्था के संबंध में आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जिन ग्रामों में दिव्यांग मतदाता है, वहां दिव्यांग रथ होना चाहिए। हर गांव में प्रकाश की समुचित एवं वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए। गर्मी के मौसम को ध्यान में रखते हुए मतदान केन्द्रों में ओआरएस उपलब्ध रहे। अधिकारियों के पास स्वास्थ्य अमलों का संपर्क होना चाहिए। आदर्श मतदान केन्द्र आकर्षक थीम के अनुसार बनाएं जाएंगे।

माओवादियों के लगाए आईईडी से हुई ग्रामीण की मौत

बीजापुर। सुरक्षा बलो को क्षति पहुंचाने के लिये लगाये आई ई डी की चपेट में आकर ग्राम मुतवेंडी के एक और मासूम ग्रामीण की मौत हो गई , 20 अप्रैल को थाना गंगालूर क्षेत्रान्तर्गत पटेलपारा मुतवेंडी निवासी 18 वर्षीय गड़िया मुतवेंडी के जंगल में वनोपज के संग्रहण के लिये गया हुआ था, वही माओवादियों के द्वारा लगाये गये आई ई डी के चपेट में आने से मौके पर ही ग्रामीण की मौत हो गई । हाल मे ही ग्राम कचिलवार थाना नैमेड का ग्रामीण अंदरूनी रास्ते से पैदल अपने गांव आते समय इतावर क्षेत्र में माओवादियों के द्वारा लगाये गये आई ई डी की चपेट में आकर बुरी तरह घायल हो गये थे ।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

सेहत

रायपुर बुधवार 24 अप्रैल 2024

रात को खाना खाने के बाद पिएं अदरक-लौंग का पानी, सेहत को मिलेंगे यह जबरदस्त फायदे

अदरक और लौंग, दोनों ही पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। ऐसे में इन दोनों का एक साथ सेवन करने से सेहत को दोगुना लाभ हो सकते हैं। लौंग में विटामिन, प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, आयरन, फॉस्फोरस, पोटैशियम, मैंगनीज और एंटीऑक्सीडेंट जैसे कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। वहीं, अदरक एंटी-इन्फ्लेमेटरी और एंटी-बैक्टीरियल गुणों से भरपूर होता है। वैसे तो अदरक और लौंग का इस्तेमाल सब्जी या करी बनाने में किया जाता है। लेकिन रात को खाना खाने के बाद अदरक और लौंग पानी पीने से सेहत को कई लाभ मिल सकते हैं। नियमित रूप से इसका सेवन करने से इम्यूनिटी मजबूत करने में मदद मिल सकती है। साथ ही, यह पाचन तंत्र को दुरुस्त रखने से लेकर वजन घटाने तक में फायदेमंद साबित हो सकता है।

इम्यूनिटी बूस्ट करे

शरीर को स्वस्थ रखने और बीमारियों से बचाने के लिए इम्यूनिटी का मजबूत होना जरूरी है। अदरक और लौंग का पानी पीने से इम्यूनिटी बूस्ट करने में मदद मिल सकती है। दरअसल, इसमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुण मौजूद होते हैं, जो संक्रमण से लड़ने में मदद करते हैं। नियमित रूप से इसका सेवन करने से आप कई गंभीर बीमारियों और संक्रमण की चपेट में आने से बच सकते हैं।

पाचन दुरुस्त रखे

रात को खाना खाने के बाद अदरक और लौंग का पानी पीने से पाचन क्रिया बेहतर होती है। इसमें मौजूद गुण पाचन एंजाइम के स्राव को बढ़ाते हैं, जिससे खाना पचाने में आसानी होती हैं। इसे पीने से आंतों की सफाई होती है, जिससे पाचन-तंत्र स्वस्थ रहता है और पेट से जुड़ी समस्याएं दूर होती हैं। नियमित रूप से इस पानी का सेवन करने से गैस, कब्ज और एसिडिटी जैसी समस्याओं से निजात मिल सकती है।

शरीर की सूजन दूरे

अदरक और लौंग का पानी पीने से शरीर की सूजन दूर करने में मदद मिलती है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं, जो सूजन और दर्द को कम करने में मदद करते हैं। इसके सेवन से जोड़ों में दर्द की समस्या भी दूर हो सकती है।

गले में खराश और दर्द से राहत

अदरक और लौंग का पानी से गले में खराश और दर्द की समस्या से राहत मिल सकती है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट, एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-फंगल गुण पाए जाते हैं, जो गले में बैक्टीरिया और संक्रमण को खत्म करने में मदद करते हैं। इसे पीने से सर्दी-खांसी और गले की समस्याओं से राहत मिलती है। अदरक और लौंग का पानी पीने से कोलेस्ट्रॉल लेवल को कम करने में मदद मिलती है। इसमें मौजूद गुण शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड के बढ़े हुए स्तर को कम करने में मदद करते हैं। इसके नियमित सेवन से दिल की बीमारियों का जोखिम भी कम हो सकता है।

वजन घटाने में मददगार

अगर आप मोटापे से परेशान हैं और वजन कम करना चाहते हैं, तो खाना खाने के बाद अदरक और लौंग का पानी पी सकते हैं। ये दोनों ही चीजें शरीर के मेटाबॉलिज्म को बढ़ाने और फैट को बर्न करने में मदद करते हैं। इस पानी को पीने से भूख शांत होती है, जिससे वजन कम करने में फायदा होता है।

अदरक और लौंग का पानी बनाने का तरीका

अदरक-लौंग का पानी बनाने के लिए सबसे पहले एक पैन में 2 गिलास पानी डालकर गैस पर रख दें। अब इसमें एक इंच अदरक का टुकड़ा और नीबू के स्लाइस डालें। साथ ही, इसमें 10-12 लौंग और कुछ पुदीने के पत्ते भी डालें। फिर पैन को ढंककर पानी को 10 मिनट तक उबालें। अब इस पानी को एक गिलास में छान लें। रोज रात में सोने से पहले इस पानी को चाय की तरह सिप लेते हुए पिएं।

इंफ्यूज्ड वॉटर ब्लोटिंग की समस्या को करेगा चुकटियों में दूर

कई लोगों को अक्सर कुछ भी खाने के बाद ब्लोटिंग की समस्या होने लगती हैं। उनका पेट फूला हुआ लगता है और पेट में दर्द भी होता है। वहीं कई बार पेट में ऐंठन की समस्या भी होती है। इसके पीछे का मुख्य कारण सही से डाइजेशन न होना है। कई बार भूख लगने पर कम खाना खाने के बाद भी लोगों का पेट फूलने लगता है। ब्लोटिंग को दूर करने के लिए कई कारगर घरेलू नुस्खे हैं।
हालांकि कई बार कुछ हैवी खाने से अगर ब्लोटिंग होती है तो इसे नजरअंदाज किया जाता है। लेकिन अगर आपको अक्सर ही ब्लोटिंग की समस्या होती है तो इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं।

इंफ्यूज्ड वॉटर के फायदे

- पोस्ट मील ब्लोटिंग को दूर करने के लिए आपको अदरक, खीरा, चिया सीड्स, पुदीना और नींबू को मिलाकर इंफ्यूज्ड वॉटर तैयार करना है।
- इंफ्यूज्ड वॉटर कुछ सीड्स, हर्ब्स या फिर कुछ हेल्दी चीजों को मिलाकर तैयार किया जाता है।
- इन सभी के गुण और टेस्ट पानी में मिल जाते हैं।
- बता दें कि अदरक का सेवन डाइजेशन के लिए काफी अच्छा माना जाता है। क्योंकि इसमें पाए जाने वाले एंटी-इंफ्लेटेमरी गुण काफी लाभकारी होते हैं।
- पुदीना की पत्तियों में मेंथॉल पाया जाता है। यह हमारी आहार नाल और मांसपेशियों को आराम देने का काम करता है। इसके साथ ही पुदीना गैस को ब्लोटिंग को कम करने में मदद करता है।
- खीरा का सेवन पेट को ठंडक पहुंचाने का काम करता है। यह शरीर को हाइड्रेट करने के साथ ही इनडाइजेशन में आराम मिलता है।
- चिया सीड्स फाइबर का बहुत अच्छा स्त्रोत होता है। साथ ही यह कब्ज को कम करने में मदद करता है।
- नींबू में सिट्रिक एसिड पाया जाता है। नींबू डाइजेस्टिव जूस के प्रोडक्शन को बढ़ाने के साथ ही पाचन में भी सहायता करता है।
- पानी की मदद से हमारा शरीर डिटॉक्स होती है। यह शरीर से गंदगी निकालने का काम करता है।
- पानी का सेवन पोस्ट ब्लोटिंग से आराम पहुंचाता है।
- गर्मी के मौसम में दिन भर आप थोड़ा-थोड़ा कर पानी पी सकते हैं।

इंफ्यूज्ड वॉटर की सामग्री

- खीरा- 3-4 टुकड़े
- अदरक- आधा इंच
- चिया सीड्स- 1 टीस्पून
- नींबू- 3-4 टुकड़े
- पुदीना- 8-10 पत्ती
- पानी- 800 मि.ली लगभग
- ऐसे बनाएं इंफ्यूज्ड वॉटर
- सभी चीजों को एक बोतल में मिलाएं।
- इसमें चिया सीड्स को भिगोकर डालें।
- फिर इसे 2-3 घंटे के लिए भिगोकर छोड़ दें।

पानी में फिर इन सबका असर मिल जाएगा।
इस पानी को घूंट-घूंट कर पूरा दिन पिएं।
इससे आपको आराम मिलेगा।

गर्मी में ढीली हो गई है त्वचा, तो टाइट करने के लिए लगाएं यह फेस मास्क

गर्मियों में त्वचा को अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता होती है। इस दौरान पसीने और यूवी किरणों के कारण स्किन में कई तरह की समस्याएं शुरू हो सकती हैं। तेज गर्मी की वजह से त्वचा में रूखापन आने लगता है। साथ ही, इलास्टिसिटी संबंधी परेशानी हो सकती है। इस दौरान आप स्किन को स्वस्थ बनाने के लिए कई तरह के घरेलू उपायों को अपना सकते हैं। इस समय फेस पैक आपके चेहरे की स्किन को टाइट करने और मुंहासों को दूर करने में मदद कर सकते हैं।

पपीते और शहद का फेस मास्क

पपीते में कई पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो त्वचा को रिपेयर करने में सहायक होते हैं। यह पोषक तत्व जैसे पपैन स्किन की इलास्टिसिटी को बेहतर करने में सहायक होते हैं। जब पपीते को शहद के साथ मिलाकर पैक बनाया जाता है, तो यह स्किन को टाइट करने का काम करता है। इसे बनाने के लिए आप एक बाउल में करीब दो बड़े चम्मच पपीते का पल्प निकाल कर मैश कर लें। इस पपीते में आप एक चम्मच शहद मिलाएं। आपका पैक तैयार है, इसे चेहरे पर लगाएं और करीब 15 से 20 मिनट तक सूखने दें। जब पैक सूख जाए, तो इसे नॉर्मल पानी से धो लें। यह पैक त्वचा को पोषण प्रदान करता है और निखार लाने में सहायक होता है।

एग व्हाइट और नींबू का रस

इस पैक को बनाने के लिए आप एक अंडा लें और इसका पीला हिस्सा अलग कर दें। अब एक बाउल में अंडे सफेद भाग को डालें और इसमें एक नींबू के रस को डालकर मिक्स करें। इस पैक को ब्रश की मदद से चेहरे पर लगाएं। अंडे के सफेद भाग में स्किन को कसने वाले गुण होते हैं, जो त्वचा की इलास्टिसिटी को इम्प्रूव करते हैं। इस पैक को चेहरे पर करीब 15 मिनट तक लगाएं। इसके बाद इसे गुनगुने पानी से साफ करें। कुछ ही दिनों में आपको चेहरे पर फर्क दिखने लगेगा।

खीरा और एलोवेरा

खीरा गर्मियों के कारण स्किन पर होने वाली समस्याओं को दूर करने में सहायक होता है। इसके साथ ही, एलोवेरा त्वचा की सभी तरह की समस्याओं को दूर करने का एक बेहतरीन विकल्प माना जाता है। इन दोनों का फेस पैक चेहरे की समस्या को दूर कर, स्किन को टाइट करने में मददगार होता है। इसे बनाने के लिए आप खीरे का रस निकाल लें। खीरे के रस में करीब एक चम्मच फ्रेश एलोवेरा जेल मिक्स करें। इस पैक को चेहरे पर लगाएं और करीब 10 से 15 मिनट सूखने दें। इससे चेहरे की स्किन की पिगमेंटेशन दूर होती है, डेड सेल्स रिपेयर होते हैं। जिससे स्किन पहले की तुलना में टाइट होने लगती है।

दही और हल्दी का मास्क

दही में लैक्टिक एसिड पाया जाता है, जो त्वचा में कसाव लाने में सहायक होता है। इसके साथ ही, हल्दी अपने एंटीऑक्सीडेंट गुणों के लिए जानी जाती है। हल्दी त्वचा की इस्लास्टिसिटी को इम्प्रूव करती है। जिससे त्वचा की कई समस्या दूर होती है। इसे बनाने के लिए एक बाउल में एक चम्मच दही और करीब एक चौथाई चम्मच हल्दी मिलाकर मिक्स करें। इस पैक चेहरे पर करीब 20 मिनट के लिए लगाकर छोड़ दें, जब पैक सूख जाए, तो इसे नॉर्मल पानी से धो लें।

गुलाब जल और टमाटर

इस पैक बनाने के लिए आप एक टमाटर को मैश कर लें। इसमें करीब एक चम्मच गुलाब जल मिलाएं। इस पैक से त्वचा के पोर्स ओपन होते हैं। साथ ही, स्किन में कसाव आता है। इस पैक को लगाने से पहले चेहरे को पानी से धो लें। इसके बाद पैक चेहरे की स्किन पर अप्लाई करें। इसे 20 मिनट तक लगा रहने दें। जिसके बाद चेहरे को गुनगुने पानी से धोएं।

गर्मी में इन तरीकों से करें रागी का सेवन

रागी एक पौष्टिक अनाज है, जो स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होता है। इसमें विटामिन-सी, विटामिन-ई, फाइबर, कैल्शियम, आयरन, प्रोटीन और एंटीऑक्सीडेंट जैसे कई पोषक तत्व पाए जाते हैं। नियमित रूप से रागी का सेवन करने से शरीर की कई समस्याएं दूर हो सकती हैं। यह पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने से लेकर वजन घटाने तक में मददगार होती है। इसे खाने से ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल रहता है और दिल की बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है।

गर्मियों के मौसम में आप इसे अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं, क्योंकि यह शरीर को ठंडा रखने में मदद करती है। वैसे तो अधिकतर लोग रागी की रोटी बनाकर खाते हैं। लेकिन आप चाहें तो रागी का डोसा या मिल्क शेक भी बना सकते हैं। जी हां, रागी का सेवन कई तरीकों से किया जा सकता है।

रागी का डोसा : आपने चावल और सूजी का डोसा तो जरूर खाया होगा। लेकिन आप चाहें तो रागी का डोसा बनाकर भी

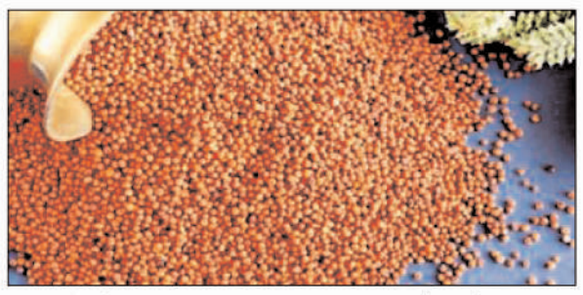

खा सकते हैं। जी हां, रागी का डोसा काफी स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। आप इसे सुबह नाश्ते में खा सकते हैं। इसके लिए आपको रागी के आटे में प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, नमक और पानी मिलाकर बैटर तैयार करना है। इसके बाद इस घोल से डोसा बनाया जा सकता है। रागी का चीला खाकर आप पूरे दिन एनर्जेटिक रहेंगे।

रागी का मिल्क शेक : चिलचिलाती धूप और गर्मी में ठंडा-ठंडा मिल्क शेक पीना सभी को पसंद होता है। ऐसे में आप चाहें तो रागी का मिल्क शेक बनाकर भी पी सकते हैं। इसे तैयार करने के लिए आपको सबसे पहले रागी को अच्छी तरह से पका लेना है। इसके बाद इसमें दूध, केला और शहद डालकर ब्लेंड कर लेना है। आपका हेल्दी रागी मिल्क शेक बनकर तैयार है। यह बच्चों से लेकर बड़ों तक, सभी को पसंद आएगा। यह न सिर्फ स्वादिष्ट होता है, बल्कि सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होता है।

रागी का सलाद : आप रागी का सेवन सलाद के रूप में भी कर सकते हैं। इसके बनाने के लिए आपको पकी हुई रागी में बारीक कटा प्याज, टमाटर, खीरा, शिमला मिर्च या अपनी पसंद की सब्जियों को मिलाना है। फिर इसमें स्वादानुसार नमक, चाट मसाला और नींबू का रस डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लेना है। रागी का सलाद खाने में काफी स्वादिष्ट होता है। साथ ही, इसमें पोषक तत्व भी अधिक मात्रा में होते हैं। रागी का सलाद खाकर आपका पेट लंबे समय तक भरा रहेगा, जिससे वजन घटाने में मदद मिलेगी।

रागी का पैनकेक : आप चाहें तो रागी का पैनकेक बनाकर भी खा सकते हैं। इसके लिए रागी के आटे में अंडा, छाछ और तेल को मिक्स करें। फिर इसका एक गाढ़ा तैयार कर लें। इसके बाद तवे पर इस मिश्रण को फैलाएं और पैनकेक तैयार कर लें। आप इसे ताजे फलों या शहद के साथ सर्व कर सकते हैं। यह एक हेल्दी स्नैक है, जो आपकी शुगर क्रेविंग्स को भी कम कर सकता है।

रागी पॉप्सिकल : गर्मियों में बाजार से आइसक्रीम खरीदने के बजाय आप घर पर ही रागी पॉप्सिकल तैयार कर सकते हैं। इसे बनाने के लिए आप रागी के आटे में दूध, चीनी और वैनिला एक्सट्रैक्ट डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। फिर इसे आइस मोल्ड में डालकर फ्रिज में रख दें। जब यह अच्छी तरह जम जाए, तो आप इसका आनंद लें।

पिएं पुदीने की पत्तियों का रस, सेहत को मिलेंगे यह फायदे

गर्मियों में बीमारियों से बचाव के लिए सही खानपान की जरूरत होती है। हेल्थ एक्सपर्ट और डॉक्टर गर्मी में ऐसे फूड्स और ड्रिंक का सेवन करने की सलाह देते हैं, जो न सिर्फ पोषण दें, बल्कि शरीर को अंदर से ठंडा रखने में भी मदद करें। यही वजह है कि गर्मी के मौसम में पुदीने की पत्तियों की डिमांड बढ़ जाती है। पुदीने की पत्तियों की तासीर ठंडी होती है, जिसके कारण लोग इसका इस्तेमाल ज्यादा करते हैं।

शरीर को रखता है हाइड्रेट

पुदीने के तासीर ठंडी होती है। गर्मी में पुदीने का रस पीने से शरीर को ठंडक मिलती है। साथ ही, यह शरीर को हाइड्रेट रखने में भी मदद करता है। गर्मियों में जिन लोगों को बार-बार प्यास लगती है, उन्हें रोजाना दिन में एक बार पुदीने की पत्तियों का रस पीने की सलाह दी जाती है।

पाचन क्रिया को बनाता है मजबूत

पुदीने की पत्तियों में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, नियासिन, विटामिन ए, विटामिन सी, सोडियम और पोटैशियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। ये पोषक तत्व गर्मियों के मौसम में होने वाली पाचन संबंधी समस्याएं जैसे पेट में दर्द, गैस, उल्टी और जी मिचलाना से राहत दिलाते हैं। गर्मी में अगर आपको खाना खाने के बाद पाचन संबंधी समस्याएं होती हैं, तो पुदीने की पत्तियों के रस में हींग मिलाकर सेवन कर सकते हैं।

स्किन के लिए है फायदेमंद

गर्मी के मौसम में कई लोगों को चेहरे पर पिंपल्स, एक्ने और कई तरह की प्रॉब्लम होती है। ऐसे लोगों के लिए भी पुदीने का रस काफी फायदेमंद होता होता है। पुदीने के रस पीने से स्किन को मॉश्चराइज होती है। साथ ही, यह स्किन को फ्रेश फील करवाने में भी मदद कर सकता है। आप चाहें तो गर्मी में होने वाली स्किन प्रॉब्लम से छुटकारा पाने के लिए पुदीने के रस भी चेहरे पर लगा सकते हैं।

वजन घटाने में मददगार

पुदीने के रस में कैलोरी बहुत ही कम मात्रा में पाई जाती है। गर्मी के मौसम में जो लोग मोटापा और वजन घटाने की प्लानिंग कर रहे हैं, उनके लिए यह बहुत फायदेमंद साबित होता है। पुदीने के रस का सेवन करने से मेटाबॉल्जिम को बूस्ट होता है, जिससे वजन घटाने में मदद मिलती है।

जलन और सूजन को करता है ठीक

गर्मी में कई लोगों को शरीर के विभिन्न हिस्सों में जलन और सूजन महसूस होती है। इस तरह की समस्याओं से छुटकारा दिलाने में भी पुदीने के पतों का रस काफी फायदेमंद साबित होता है। इसके एंटीइंफ्लेमेटरी गुण आपके शरीर की सूजन और जलन को कम कर सकते हैं।

थायराइड में पेट की चर्बी से हैं परेशान? कम करने के लिए डाइट में शामिल करें यह पोषक तत्व

अस्वस्थ जीवनशैली और खराब खानपान स्वास्थ्य को प्रभावित करने लगते हैं। इसके कारण गंभीर समस्याओं जैसे कि ब्लड प्रेशर, मोटापा, एंग्जायटी, डिप्रेशन जैसी समस्याओं का कारण बन सकता है। इसी तरह थायराइड भी एक गंभीर समस्या बन चुका है, जिसमें व्यक्ति का वजन तेजी से बढ़ना और घटना भी शामिल है। वहीं इस समस्या में कई लोगों में पेट की चर्बी सबसे पहले बढ़ना शुरू होती है। ऐसे में अगर इसे समय पर कंट्रोल न किया जाए, तो यह समस्या बढ़ने का कारण बन सकता है।

कोलिन - कोलिन एक प्रकार का आवश्यक पोषक तत्व है, जो ब्रेन और नर्वस सिस्टम को बेहतर रखने में मदद करता है। यह पोषक तत्व लीवर को डिटॉक्स करने में फायदेमंद माना जाता है। वहीं इसका सेवन फैटी लीवर और खून मे अत्यधिक वसा बढ़ने से रोकने में मदद करता है। इससे प्राकृतिक रूप से कैलोरी का सेवन कम होता है, जो चर्बी कम करने में मदद कर सकता है। अपनी डाइट में कोलिन शामिल करने के लिए फिश, बीफ, अंडे, बीन्स और नट्स का सेवन कर सकते हैं।

सेलेनियम - शरीर में थायराइड हार्मोन बनने के लिए सेलेनियम जरूरी माना जाता है। इसकी कमी शरीर में थायराइड की समस्या बढ़ाने का कारण बन सकती है। वहीं अगर इसका पर्याप्त मात्रा में सेवन किया जाए, तो यह चर्बी घटाने में फायदेमंद हो सकती है। सेलेनियम अपनी डाइट में शामिल करने के लिए आप ब्राजील नट्स, बीन्स और नट्स, अंडे का सेवन कर सकते हैं। एक्सपर्ट के मुताबिक नियमित रूप से 2 ब्राजील नट्स का सेवन सेहत के लिए फायदेमंद हो सकता है।

आयोडीन - थायराइड की समस्या के लिए आयोडीन जरूरी माना जाता है। इसका सेवन थाइराइट कंट्रोल करने के लिए फायदेमंद होता है। इसका सेवन शरीर का मेटाबोलिज्म बढ़ाने और थायराइड हार्मोन बनाने में मदद करता है। शरीर में आयोडीन की कमी होने से मेटाबोलिज्म कमजोर होने लगता है, जो खाने को फैट्स की तरह शरीर में स्टोर करने लगता है। सही मात्रा में आयोडीन लेना बढ़ी हुई चर्बी को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है। डाइट में आयोडीन शामिल करने के लिए दूध, दही, छाछ और हरी सब्जियों का सेवन करना फायदेमंद हो सकता है।

जिंक -शरीर को पोषक तत्व सोखने के लिए जिंक की जरूरत होती है। यह शरीर में प्रोटीन, फैट्स और कार्ब्स को मेटाबोलिज करने में मदद करता है। थाइराइड मे जिंक की कमी थकान, कमजोरी और बढ़ते वजन का कारण बन सकती है। डाइट में जिंक शामिल करने के लिए तरबूज, खरबूज के बीज, ओट्स, काजू बेहद फायदेमंद माने जाते हैं।

चेहरे पर मिक्स करके लगाएं एलोवेरा और ग्लिसरीन, दूर होंगी त्वचा की कई समस्याएं

चेहरे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए हम सभी क्या कुछ नहीं करते हैं। कोई महंगे ट्रीटमेंट लेता है, तो कोई तरह-तरह के घरेलू उपायों को आजमाता है। अगर आप भी घरेलू उपायों से ही अपनी खूबसूरती को निखारना चाहते हैं, तो इस लेख में हम आपके लिए दो इंग्रीडिएंट्स लेकर आए हैं, जिन्हें आप अपने चेहरे पर इस्तेमाल कर सकते हैं। ये हैं- एलोवेरा और ग्लिसरीन। वैसे तो कई लोग एलोवेरा और ग्लिसरीन को अलग-अलग तरीकों से इस्तेमाल करते रहते हैं। लेकिन आप चाहें तो एलोवेरा और ग्लिसरीन को एक साथ मिक्स करके भी अपने चेहरे पर लगा सकते हैं। इन दोनों का कॉम्बिनेशन त्वचा के लिए बेहद कारगर साबित हो सकता है।

फ्री रेडिकल्स से बचाए :

एलोवेरा में एंटीऑक्सीडेंट्स गुण होते हैं, जो त्वचा को फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाने में मदद करते हैं। ऐसे में अगर आप चेहरे पर एलोवेरा और ग्लिसरीन को मिक्स करके लगाएंगे, तो त्वचा को नुकसान होने से बचाया जा सकता है। दरअसल, फ्री रेडिकल्स की वजह से त्वचा पर जल्दी झुर्रियां पड़ने लगती हैं। ऐसे में आप झुर्रियों से अपना बचाव कर सकते हैं।

त्वचा को मॉइश्चराइज करे :

एलोवेरा और ग्लिसरीन में मॉइश्चराइजिंग गुण होते हैं। अगर आप एलोवेरा और ग्लिसरीन को मिक्स करके लगाएंगे, तो इससे चेहरे पर नमी बनी रहेगी। ड्राई स्किन वाले लोगों के लिए एलोवेरा और ग्लिसरीन को मिलाकर लगाना काफी फायदेमंद हो सकता है। इससे ड्राई, रूखी और बेजान त्वचा से छुटकारा मिलता है।

झुर्रियों और फाइन लाइंस से छुटकारा दिलाए :

एलोवेरा और ग्लिसरीन को मिक्स करके लगाने से एजिंग के लक्षणों को भी कम करने में मदद मिल सकती है। अगर आप इस पेस्ट को लगाएंगे, तो इससे झुर्रियों और फाइन लाइंस से छुटकारा मिल सकता है।

त्वचा को मुलायम बनाए :

एलोवेरा और ग्लिसरीन त्वचा को कोमल और मुलायम बनाने में भी मदद करते हैं। रोजाना इस पेस्ट को लगाने से त्वचा का रूखापन कम होगा और त्वचा चमकदार बनेगी। एलोवेरा और ग्लिसरीन त्वचा को हाइड्रेट रखते हैं।

दाग-धब्बों से निजात दिलाए

अगर आपके चेहरे पर दाग-धब्बे हैं, तो एलोवेरा और ग्लिसरीन को मिलाकर लगाना फायदेमंद हो सकता है। एलोवेरा और ग्लिसरीन चेहरे के दाग-धब्बों को कम करने में मदद करते हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, बुधवार 24 अप्रैल 2024

उड़नदस्ता दलों की बैठक आज कला मंदिर सिविक सेंटर भिलाई में

दुग (आरएनएस)। लोकसभा निर्वाचन 2024 हेतु दुर्ग जिला अंतर्गत निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण अंतर्गत गठित उड़नदस्ता दल (एफएसटी), स्थैतिक निगरानी दल (एसएसटी) के दल प्रभारियों की बैठक 24 अप्रैल 2024 को दोपहर 12 बजे से कला मंदिर सिविक सेंटर भिलाई में आयोजित की गई है। निर्वाचन व्यय प्रेक्षक द्वारा आयोजित इस बैठक में पुलिस प्रेक्षक एवं पुलिस अधीक्षक दुर्ग, सभी सहायक रिटर्निंग ऑफिसर और नोडल/सहायक नोडल अधिकारी ईईएम अपने एफएसटी एवं एसएसटी के दल प्रभारियों सहित बैठक में उपस्थित रहेंगे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के राजभवन में रात्रि विश्राम को लेकर कांग्रेस ने दर्ज की आपत्ति

कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में की शिकायत

रायपुर (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजभवन में रात्रि विश्राम को लेकर कांग्रेस ने आपत्ति दर्ज की है. इसकी शिकायत कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में की है. साथ ही प्रधानमंत्री को राजभवन मे नहीं रोकने की मांग की है। शैलेश नितिन त्रिवेदी ने प्रधानमंत्री के राजभवन में रूकने को लेकर कहा कि ये आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है क्योंकि राजभवन को संवैधानिक प्रमुख राज्यपाल का निवासी स्थान है. ऐसे में राज्य के संविधान एक प्रमुख के निवास पर प्रधानमंत्री का रात्रि विश्राम करना सीधे सीधे पूरे राज्य के प्रदाताओं को और पूरी सरकारी मशीनरी को प्रभावित करेगा और यह निष्पक्ष चुनाव की परिस्थितियों को दूषित करेगा।

उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि निष्पक्ष चुनाव के परिस्थितियों को प्रभावित करने की भाजपा की यह चाल है, जिसका हम विरोध करते हैं. हम मांग करते हैं कि निर्वाचन आयोग प्रधानमंत्री की रात्रि विश्राम के लिए उनकी गरिमा और उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप राजभवन की जगह किसी और अन्य जगहों में प्रोटोकाल के अनुसार सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित करें. उन्होंने कहा कि यदि प्रधानमंत्री राजभवन में रुकते हैं और एक भी लोकसभा से भाजपा के प्रत्याशी विजयी होते हैं तो हम सीधा न्यायालय जाएंगे। हमने हमारी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा है अगर हमारी मांग नहीं मानी जाती है तो न्यायालय जाएंगे.हमारी मांग को लेकर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी का कहना है कि हम निर्वाचन आयोग को पत्र लिखकर मार्गदर्शन मांग रहे हैं जैसे वहां से निर्देश मिलेगा उसके अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर द्वारा कैंसर रोग ओपीडी आज बिलासपुर में

बिलासपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश भर में उच्चतम गुणवत्ता के साथ किफायती स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रसिद्ध एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल द्वारा आज 24 अप्रैल को बिलासपुर में कैंसर रोग परामर्श ओपीडी आयोजित की जा रही है। इस ओपीडी में एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर के कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ यशवंत कश्यप अपनी सेवाएं देंगे। इस ओपीडी का आयोजन बिलासपुर नेहरू नगर, मेन रोड में स्तिथ श्री मंगला हॉस्पिटल में प्रात: 10 से दोपहर 1 बजे तक किया जा रहा है। जिन मरीजों को मुंह में ना ठीक होने वाले छाले, स्तन कैंसर, पेट आंत का कैंसर, स्तन में गांठ होना, शरीर में गांठ होना और त्वचा के बाहर से महसूस होना, खून का कैंसर, फेफड़े का कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, कीमोथेरपी, टारगेटेडथेरेपी, इम्यूनोथेरेपी, संबंधित या अन्य शिकायत को वे आज अग्रिम पंजीयन कर इस क्लीनिक का लाभ ले सकते हैं।

अपर सचिव, कोयला मंत्रालय एम. नागराजू (भाप्रसे) ने किया एसईसीएल रायगढ़ क्षेत्र का दौरा

बिलासपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 23 अप्रैल 2024 को अपर सचिव, कोयला मंत्रालय श्री एम. नागराजू (भा.प्र.से.) एसईसीएल रायगढ़ क्षेत्र के दौरे पर पहुंचे। रायगढ़ क्षेत्र पहुँचने पर सीएमडी डॉ प्रेम सागर मिश्रा ने श्री एम. नागराजू का आत्मीय स्वागत किया। रायगढ़ क्षेत्र में श्री नागराजू द्वारा पिछले वर्ष एमडीओ मोड पर संचालन के लिए पेलमा कोलियरीज को दी गयी पेलमा ओसी खदान का दौरा किया एवं परियोजना की प्रगति की समीक्षा की।

विदित हो कि गत वर्ष एसईसीएल ने रायगढ़ क्षेत्र में अवस्थित पेलमा खुली खदान के संचालन के लिए पेलमा कोलियरीज के साथ समझौते किया था। समझौते के अनुसार पेलमा कोलियरीज अगले 20 वर्षों तक खदान का संचालन करेगी जिसके तहत इस परियोजना की डिज़ाइनिंग, फाइनेंसिंग, प्रोक्योरमेंट, निर्माण, संचालन एवं रख-रखाव से जुड़ी सभी गतिविधियों की ज़िम्मेदारी पेलमा कोलियरीज की होगी। 20 वर्ष की अवधि के दौरान खदान से कुल 219 मिलियन टन से अधिक कोयला निकाला जाना प्रस्तावित जिसमें एक वर्ष में अधिकतम 15 मिलियन टन कोयला निकालने का लक्ष्य रखा गया है। खदान से उच्च गुणवत्ता वाला जी-12 ग्रेड का कोयला निकाला जाएगा। दौरे के दौरान अपर सचिव श्री नागराजू ने सीएमडी डॉ प्रेम सागर मिश्रा के साथ मिलकर पौधारोपण किया एवं एसईसीएल द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना भी की। दौरे के दौरान निदेशक (वित्त) श्री जी श्रीनिवासन, क्षेत्रीय महाप्रबंधक रायगढ़ क्षेत्र डॉ हेमंत शरद पांडे एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी सर के साथ रहे।

ट्रेनों में महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए जन जागरूकता अभियान

रेलवे सुरक्षा बल के जवानों ने अप्रैल 2023 से मार्च 2024 तक 19794 यात्री गाड़ियो में एक लाख 51 हजार 979 रेल यात्रियों की मदद की

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा चलाए जा रहे 'मेरी सहेली' अभियान से महिला यात्रियों में सुरक्षा की भावना तथा आत्मविश्वास भी बढ़ रहा है

रायपुर/बिलासपुर (विश्व परिवार)। महिलाओं की सशक्तिकरण के लिए रेल मंत्रालय ने महिलाओं के लिए यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न पहल की हैं। ये प्रयास मुख्य रूप से महिला यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केंद्रित हैं। रेलवे सुरक्षा बल ने महिलाओं, विशेष रूप से चयनित लंबी दूरी की ट्रेनों में अकेले या बच्चों के साथ यात्रा करने वाली महिलाओं के लिए सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ मेरी सहेली, ऑपरेशन मातृशक्ति आदि जैसी कई पहल शुरू की हैं।

मेरी सहेली टीमें लंबी दूरी की ट्रेनों में अकेले यात्रा करने वाली महिला यात्रियों की ट्रेन यात्रा के दौरान उत्पन्न होने वाली किसी भी स्थिति पर त्वरित प्रतिक्रिया देकर, प्रारंभिक बिंदु से उनके अंतिम गंतव्य तक सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। वर्तमान में, महिला आरपीएफ कर्मियों से युक्त 230 से अधिक समर्पित मेरी सहेली टीमों को देश भर के विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर तैनात किया गया है, जो 400 से अधिक ट्रेनों को कवर करती हैं और हर दिन औसतन चौदह हजार से अधिक महिला यात्रियों को सहायता प्रदान करती हैं।

यह पूरे भारत में महिलाओं के लिए ट्रेन यात्रा को सुरक्षित बनाने की पहल के समर्पण और प्रभावशीलता को रेखांकित करता है। ये टीमें यात्रियों को उनकी यात्रा के दौरान उठाए जाने वाले सुरक्षा उपायों के बारे में शिक्षित करने और संकट की स्थिति में सहायता प्राप्त करने के लिए उपलब्ध चैनलों के बारे में जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में मेरी सहेली की 13 टीम कार्यरत है, जो कि 13 अलग-अलग ट्रेनों को कवर करती है। रेलवे सुरक्षा बल की मेरी सहेली टीम में महिला कांस्टेबल से लेकर महिला सब इंस्पेक्टर, इंस्पेक्टर शामिल है।

महिला आरपीएफ कर्मी ट्रेनों में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह गर्व की बात है कि समस्त केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) में रेलवे सुरक्षा बल में महिलाओं का प्रतिशत सबसे अधिक है। नई भर्ती की गई महिलाओं को उनकी प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए %मेरी सहेली टीमों में शामिल किया जा रहा है।

आरपीएफ की महिला कर्मी न केवल महिला रेल यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि मुसीबत में महिला यात्रियों की मदद भी करती हैं। आरपीएफ की महिलाकर्मी ऑपरेशन मातृशक्ति के तहत इन महिलाओं की गोपनीयता की रक्षा करते हुए उन्हें सुरक्षित और सम्मानजनक बच्चे के जन्म की सुविधा प्रदान करती हैं।

भारतीय रेलवे में आरपीएफ ने वर्तमान वित्तीय वर्ष के दौरान अब तक ट्रेनों या रेलवे परिसरों में प्रसव के 130 ऐसे मामलों में सहायता प्रदान की है। इस वर्ष दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में 19794 ट्रेनों में लगभग 1 लाख 51 हजार अकेले यात्रा कर रही महिला यात्रियों को मेरी सहेली की टीम ने सहायता पहुंचाई। इसमें बिलासपुर रेल मण्डल में 7040 ट्रेनों में 67911 महिला यात्री, रायपुर रेल मण्डल में 7945 ट्रेनों में 70790 महिला यात्री तथा नागपुर रेल मण्डल 4809 ट्रेनों में 13278 महिला यात्री शामिल हैं।

जादूगर सम्राट अजूबा का शो देखने उमड़ी भीड़, स्कूली बच्चों ने भी देखा रोमांचक जादू

रायपुर (विश्व परिवार)। पिछले कई दिनों से शहर के लोगों को अपनी जादुई करिश्मों से दिवाना बनाने वाले जादूगर सम्राट अजूबा का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है। जादूगर सम्राट अजूबा ने बताया कि जब से यह जादू रायपुर में दिखा रहे हैं लोगों का अच्छा प्रतिसाद मिला है। समाज का ऐसा कोई वर्ग नहीं है जो हमारे जादू का कायल नहीं हुआ। हमारी कोशिश होती है कि हम अपने जादू से लोगों का मनोरंजन कर उन्हें जादू दुनिया से परिचित कराएं। इसमे हमारी पूरी टीम काम करती है। सभी का प्रयास रहता है कि अच्छा से अच्छा जादू दिखाकर लोगों का मनोरंजन करें। हमारा जादू शो 5 मई तक आपके शहर में रहेगा लेकिन अगर दर्शकों का भरपूर प्यार मिला तो शो को एक सप्ताह बढ़ाकर 12 मई तक कर सकते हैं। हमारे शो में रोजाना कुछ न कुछ नए नए कारनामें देखने को मिलेंगे। आखिरी समय में आप सपरिवार पधारिये और जादूगर अजूबा के विश्व स्तरीय शो का आनंद उठाईये। रोजाना 3 शो चलते हैं - 1 बजे, 4 बजे एवं शाम 7 बजे। प्रत्येक शो 2 घंटे का होता है। जिसका टिकट आप ऑनलाइन www.jadugarajooba.com से या ऑफलाइन रंग मंदिर परिसर में बने टिकट काउन्टरश्च से ले सकते हैं। रोजाना शो को देखने स्कूल के बच्चे एवं ग्रुप संस्थाओं के लोग पहुँच रहे हैं जिन्हें जादूगर अजूबा की तरफ से विशेष छूट दिया जा रहा है।

राजेश जैन 'राही' की व्यंग्य कृति 'नाचे आम आदमी' का विमोचन

रायपुर (विश्व परिवार)। वरिष्ठ कवि राजेश जैन 'राही' की व्यंग्य कृति 'नाचे आम आदमी' का विमोचन 21 अप्रैल, रविवार, वृंदावन सभागार, रायपुर में अतिथियों डॉ. गिरीश पंकज, डॉ. चितरंजन कर, डॉ महेंद्र ठाकुर, डॉ. मृणालिका ओझा, शालू साँखला (भीलवाड़ा), सलोनी जैन (ब्यावर), डॉ सीमा श्रीवास्तव, राजकुमार मसंद एवं संजय जैन गिड़िया के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

कृति पर डॉ. गिरीश पंकज, डॉ चितरंजन कर एवं डॉ. मृणालिका ओझा ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। कृति प्रतिष्ठित श्वेतवर्णा प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई है। गद्य और पद्य मिलाकर कृति में कुल 81 व्यंग्य हैं। कृति की भूमिका प्रख्यात व्यंग्यकार श्री सुभाष चन्दर दिल्ली ने लिखी है। विमोचन के पश्चात मेरे द्वारा शीर्षक व्यंग्य नाचे आम आदमी एवं काव्य व्यंग्य शिक्षा और संस्कार की मुलाकात का पाठ किया गया। जिसे उपस्थित साहित्य प्रेमियों ने बहुत पसंद किया।

विमोचन के पश्चात आयोजित कवि-सम्मेलन में शालू साँखला (भीलवाड़ा), सलोनी जैन (ब्यावर) समेत स्थानीय रचनाकारों ने अपनी कविताओं से सबका मन मोह लिया।

राजेश जैन 'राही' ने कहा-

जिस पर मूल्य लिखा रहता है वह बिक जाता है,
जो मूल्यों के लिए जीता है, वह रास्ता दिखलाता है।

आर डी अहिरवार ने कहा-

माना तेरी नज़र में मेरी अहमियत नहीं
ऐसा नहीं कि मुझ में कोई ख़ासियत नहीं।
काँटो के बदले आपको मुझ से मिलेंगे फूल
गाली के बदले गाली मेरी तरबियत नहीं।

जावेद नदीम जी ने कहा-

कोई खज़ाना मिल सकता है ध्यान रखो
उजड़ी बस्ती वालों से पहचान रखो
टूट गया तो ख़ुद को कैसे देखोगे
चेहरे वालों आईने का मान रखो।

सीमा श्रीवास्तव ने कहा-

पिता ने आँखों में कभी नमी नहीं आने दी।
जीवन में किसी चीज की कमी नहीं आने दी।
खेल खेल में मन बहलाने को जो खिलौने तोड़े थे।
उनके लिए उन्होंने ओवरटाइम काम करके पैसे जोड़े थे।

अनिल श्रीवास्तव ज़ाहिद ने कहा-

हम जिधर भी गये काफ़िला बन गया।
जिसको जो भी लिखा वो दुआ बन गया।
गमजदा लोगों से जो कहा हमने वो
उनके हर दर्दो गम की दवा बन गया।

विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर कार्य करने वाली विभिन्न सामाजिक संस्थाओं 1- योगानन्दम 2- रंगभूमि 3- प्रकृति की ओर सोसायटी 4- स्टे फिट विथ मी 5- युवा, रायपुर को नवरंग समाज रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सीमा श्रीवास्तव एवं श्री अनिल श्रीवास्तव ज़ाहिद ने किया।

सदन में प्रमोद साहू पारखी (तुमसर), आई.डी. आशिया राजेंद्र सेठिया, डॉक्टर सुशील कोटेजा, शायर जावेद नदीम, सुदेश मेहर, कुमार जगदलपुर, हर्ष व्यास की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

व्यंग्य कृति श्वेतवर्णा प्रकाशन, दिल्ली द्वारा ऑनलाइन उपलब्ध है।

बिलासपुर रेलवे द्वारा नुक्कड़ नाटक तथा रैली के माध्यम से यात्रियों को दी जाती है संरक्षा संबंधी जानकारी

रायपुर (विश्व परिवार)। संरक्षा संगठन, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर द्वारा तीनों रेल मंडलो में संरक्षा से संबंधित जानकारी देने के लिए रेल प्रशासन द्वारा सालभर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जून माह में अंतर्राष्ट्रीय समपार (फाटक) जागरुकता दिवस के साथ-साथ अनेक सड़क उपयोगकर्ताओं में सुरक्षित समपार फाटक पार करने के दौरान ली जाने वाली सावधानियों एवं नियमों के प्रति जागरूकता लाने के लिए समपार फाटक पर अनेक जागरूकता संरक्षा विशेष अभियान चलाया जाता है।

इस अभियान के तहत संरक्षा सलाहकारों तथा नागरिक सुरक्षा स्वयं सेवकों, स्काउट गाइड व विभिन्न विभागों के पर्यवेक्षकों द्वारा अनेक फाटकों में पाम्पलेट बाँटकर तथा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से यात्रियों को सुरक्षित फाटक पार करने के बारे में समझाएं जाती है। इस दौरान वहाँ से गुजरने वाले राहगीरों व वाहन चालकों को फाटक पार करने में बरती जाने वाली सावधानियों के साथ अपने जान-माल की रक्षा एवं रेलवे की सुरक्षा से संबन्धित जानकारी दी गई। साथ ही समपार फाटक पार करते समय गाडी को धीमा चलाने, सिग्नल हरा होने पर ही आगे बढने, फाटक बंद हो तो खुलने का इंतजार करने तथा फाटक पार करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का परामर्श दिया गया।

इसके साथ ही तीनों रेल मंडलो के रेलवे स्टेशन में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समपार फाटकों में होने वाली घटनाओं की जीवंत प्रस्तुति देकर यात्रियों को समपार फाटक पार करने की सुरक्षात्मक जानकारी दी गई। स्टेशन परिसर में स्काउट गाइड द्वारा रैली निकालकर पाम्पलेट बांटे गए तथा यात्रियों को स्लोगन व चर्चा के माध्यम से समपार फाटक पार करने के दौरान ली जाने वाली सावधानियों से अवगत कराते हुये उनसे सहयोग की अपील की जाती है। साथ ही उनसे आग्रह किया जाता है कि रेल पर सेल्फी नहीं लें, चलती ट्रेन में चढ़ने या उतरने की कोशिश न करें।

सिपेट, रायपुर में एस.ई.सी.एल., बिलासपुर सी.एस.आर. योजना के तहत् प्रायोजित कौशल प्रशिक्षण का समापन

रायपुर (विश्व परिवार)। केन्द्रीय पेट्रोरसायन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट), रायपुर में साऊथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (स्श्वष्टरु), बिलासपुर द्वारा प्रायोजित छत्तीसगढ़ राज्य से एसईसीएल खनन प्रभावित क्षेत्रों के युवाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान किये जा रहे है। इसी तारतम्य में सिपेट, रायपुर में 06 माह का मशीन ऑपरेटर प्लास्टिक्स प्रोसेसिंग एवं मशीन ऑपरेटर प्लास्टिक्स एक्ट्रूजन कोर्स में प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसका समापन समारोह दिनांक 23.04.2024 का आयोजन मुख्य अतिथि डॉ. प्रियंका शुक्ला, संचालक, तकनीकी षिक्षा संचालनालय छत्तीसगढ़ राज्य शासन, विशिष्ट अतिथि डॉ. जे. एस. बल, उप संचालक, तकनीकी शिक्षा संचालनालय छत्तीसगढ़ राज्य शासन तथा अध्यक्ष डॉ. आलोक साहू, प्रधान निदेशक एवं प्रमुख सिपेट, रायपुर की उपस्थिति में किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. आलोक साहू द्वारा अध्यक्षीय एवं स्वागत उद्बोधन देते हुए अतिथिद्वय को सिपेट में संचालित होने वाली शैक्षणिक, कौषल विकास एवं तकनीकी सेवाओं से संबंधित संचालित गतिविधियों से अवगत कराया गया तथा बताया गया कि किस प्रकार सिपेट ने साऊथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (स्श्वष्टरु) के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ राज्य के एसईसीएल खनन प्रभावित क्षेत्रों के युवाओं को प्रशिक्षण देते रोजगार की अवसर प्रदान कर रहा है, जिससे छत्तीसगढ़ राज्य के बेरोजगार युवाओं ने 06 माह कौशल कर देश के विभिन्न उद्योगों में नौकरी कर अपना कैरियर संवारने के अवसर प्रदान किये है। साथ ही यह अनुरोध किया गया कि सिपेट में भविष्य में होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों म् प्रशिक्षणार्थी अधिक से अधिक संख्या में अपने आस-पास के युवा साथियों को जागरूक एवं प्रेरित कर उनके जीवन में रोजगार की अवसर प्रदान करने में सहयोग करें। मुख्य अतिथि डॉ. प्रियंका शुक्ला द्वारा अपने संबोधन में बताया गया कि भारत के विकास में एवं औद्योगिक तरक्की में कौषल विकास का कितना महत्वपूर्ण योगदान है। साथ ही मेक इन इंडिया, कौषल भारत कुषल भारत जैसे मिशन का उल्लेख करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को अग्रणी एवं सक्रिय भूमिका निभाने हेतु प्रेरित किया गया। सिपेट द्वारा अनुवरत रूप से प्रदान किये जा रहे प्रषिक्षण तथा एसईसीएल के समाज के विकास में योगदान की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की। समारोह के अंत में अतिथियों के कर कमलों से प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र के साथ-साथ मेसर्स अभिजीत टेक्नो-प्लास्ट (इंडिया) प्रा. लिमिटेड, नासिक, मेसर्स राविकास ऑटोमोटिव सिस्टम प्रा.लिमि., पुणे, मेसर्स योकोहामा ऑफ हाइवे टायर्स लिमिटेड, गुजरात, मेसर्स सेक्यूर ग्रुप ऑफ कम्पनिस, हैदराबाद, मेंसस हॉलमार्क इक्यूपमेंट प्रा. लिमि., रायपुर मेसर्स मुचुअल आटोमोटिव (प्रा.) लिमि., पुणे, मेसर्स पुणे पॉलिमर्स (प्रा.) लिमि., पुणे एवं मेसर्स ओड़िसा कॉकरीट (प्रा.) लिमि., रायपुर में नियोजन के प्रस्ताव पत्र प्रदान किये गये।

कार्यक्रम में सिपेट, रायपुर से श्री नीतेश जैन, प्रशासनिक अधिकारी, डॉ. सुशांता कुमार सामल श्री मनोज कुमार राजपूत, प्रषिक्षण प्रभारी, नियोजन प्रभारी श्री सत्यजीत प्रधान, पाठ्यक्रम प्रभारी श्री नीरज सार्वा तथा श्री प्रितम चक्रधारी एवं श्री बी. श्रीनिवास राव, , सहित सिपेट के सभी कार्मिकगण उपस्थित रहे।

मतदाता जागरूकता के लिए शत-प्रतिशत मतदान के लिए दो वीडियो सॉंग का शुभारंभ

गाने की रचयिता श्रीमती मीनाक्षी केसरवानी को प्रशस्ति पत्र और शॉल भेंट कर किया गया सम्मानित

रायपुर (आरएनएस)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत आज कलेक्ट्रेक्ट परिसर स्थित रेडक्रॉस सभाकक्ष में सामान्य प्रेक्षक श्री संजय कुमार, श्री रोहनचंद ठाकुर और जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने मतदाता जागरूकता के दो वीडियो सांग का शुभारंभ किया। शत-प्रतिशत मतदान पर आधारित गाने की रचना गौरेला-पेड्रा-मारवाही जिले की श्रीमती मीनाक्षी केसरवानी ने की है। साथ ही गाने का वीडियो भी तैयार किया है। इस अवसर पर सामान्य प्रेक्षक श्री कुमार व श्री ठाकुर व जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. सिंह ने श्रीमती केसरवानी को प्रशस्ति पत्र देकर शॉल भेंट कर सम्मान किया और उन्हें शुभकामनाएं दी।

गौरतलब है कि श्रीमती केसरवानी द्वारा पूर्व में भी मतदाता जागरूकता का संदेश देने के लिए एक वीडियो साग बनाया गया है। जिसकी धुन शहर के चौक - चौराहों में भी सुनाई देती है। इस शुभारंभ अवसर पर जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप, अपर कलेक्टर श्री उज्जवल पोरवाल सहित कई अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे।

जलने के बाद
पुन :निर्माण सर्जरी
(रिकंस्ट्रक्शन)

कालड़ा बर्न एवं
प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता
ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न
Food Licence
इन्कम TAX फाईल
M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड
प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस
डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354